**With Best Compliment From:**

P.P.Cement
P.P.Cement

# Portland Pozolanna Cement

Laxmi Business Promotions (Pvt.) Ltd

(Cement Division)

(Manufacturer of Portant Pozolanna Cement)

Add: Ram Nagar Industrial Area, Chandauli, U.P.

प्रवेश प्रारम्भ फीस मात्र 300/–रूपये मासिक

# M-Tech

(COMPUTER EDUCATION CENTRE)

**इग्नू द्वारा संचालित** : एम.सी.ए, बी.सी.ए. सी.आई. सी., डी.सी.ओ,

**डोयेक नईदिल्ली द्वारा संचालितः** ओ लेवल, ए लेवल

**एम.सी.आर.पी. विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा संचालित** : पीजीडीसीए, डीसीए एवं **अन्य कोर्सेस** : टैली, जॉवा, विजूअल बेसिक, आटो कैड, सी++,3डी होम, ओरेकल, इंटरनेट

**कम्प्यूटर द्वारा कुन्डली, जॉब वर्क, प्रोजेक्ट वर्क,विजिटींग कार्ड, शादी कार्ड, थीसीस**

**सम्पर्क करेः**

**एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर,** कौशाम्बी रोड, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद

**शाखाः** एल.आई.जी 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

इलाहाबाद का नं0 1

LEARN THE KAM WAY, SUCCEED ALL THE WAY,

IAS PCS

# कैम एकेडमी

IIT PMT

पताः अल्लापुर (निकट पानी की टंकी), इलाहाबाद

## कैम एकेडमी द्वारा संचालित

## के0डी0 क्लासेज

इतिहास एवं सामान्य अध्ययन द्वारा

## के0 डी0 सिंह

प्रधान ऑफिसः
अल्लापुर (निकट पानी की टंकी)

☎2506978, Mob: 9415217737

शाखा ऑफिस :
मनमोहन पार्क, कटरा, इलाहाबाद

बजे तक

्य अभिनय

स्थापित 1982 | मान्यता प्राप्त | रजिः 1030

# किशोर गर्ल्स हाईस्कूल एवं कॉलेज

कक्षाए : नर्सरी से कक्षा 12 तक

प्रधानाचार्या
कु0 सविता सिंह भदौरिया

मीरा पट्टी, टी.पी. नगर, जी.टी.रोड, इलाहाबाद

प्रबंधक
वी.एन. साहू

संस्थापित :1987 | उ0प्र0 सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त | ☎ 2636421

# श्याम लाल इंटर कॉलेज

चकिया, कसारी–मसारी, इलाहाबाद

कक्षा :केजी से 12 तक (विज्ञान एवं कलावर्ग)

(बालक / बालिकाओं)

प्रबंधक
अनिल कुशवाहा

25 जून से प्रवेश प्रारम्भ है।

प्रधानाचार्या
सुनीता कुशवाहा
(एम.एससी.बी.एड)

प्रवेश प्रारम्भ "SHAPING INDIA'S DESTINY THROUGH LITERACY" प्रवेश प्रारम्भ ☎2697876

# एल.डेविड मेमोरियल जूनियर हाई स्कूल

(अंग्रेजी एवं हिन्दी माध्यम)

कक्षा एल.के.जी से 10 तक (हिन्दी माध्यम) कक्षा यू.के.जी से आठ तक (अंग्रेजी माध्यम)

**प्रबंधक** श्री अरूण ए.डेविड

पताः स्टेशन रोड, नैनी, इलाहबाद

**प्रधानाचार्या** एस.जे.डेविड

# आदर्श शिक्षा निकेतन जूनियर हाई स्कूल

## गीत गंगा संगीतालय

## कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र

यहॉ पर इंटरनेट एवं प्रिटिंग, टाइपिंग और कुण्डली बनवाने की सुविधा है।

**प्रधानाचार्य** एम.डी.पाठक

पताः 67 बक्शी कला, दारागंज, इलाहाबाद

**प्रबंधक** डॉ. एस.के. पाठक

उत्तम शिक्षा उचित व्यवस्था ☎2501999

# शक्ति विद्या निकेतन
## जूनियर हाई स्कूल

श्री बच्चा लाल, मास्टर जी, पुरानी झूँसी, इलाहाबाद

**1 जुलाई 2003 से प्रवेश आरम्भ, प्रातः 8 बजे से 12 बजे तक**

- शूल्क 40/–रू0 प्रति माह प्रति छात्र
- अनुभवी एवम् योग्य शिक्षिकाओं द्वारा शिक्षण कार्य
- छात्रों के उज्जवल भविष्य के लिए उचित शिक्षण व्यवस्था
- दाई द्वारा छात्रों को विद्यालय लाने व पहूँचाने की उचित व्यवस्था।

नोटः इंग्लिश और गणित अध्यापिका की जगह खाली है।

**संस्थापिका** श्रीमती एम.डी.पाठक

☎ : 2233763

# चिल्ड्रेन्स एकाडेमी

एच.आई.जी–3, प्रीतम नगर, इलाहाबाद

(अंग्रेजी माध्यम स्कूल)

**प्री0 नर्सरी से कक्षा आठ तक**

अनुभवी अध्यापिकाओं द्वारा उचित शिक्षा का प्रबंन्ध तथा प्रत्येक कक्षा में सीमित बच्चे

**प्रधानाचार्या** प्रीति बोस

## गुप्त रोगों का सफल ईलाज

नामर्दी, स्वप्न दोष, शीघ्र–पतन, धातु पतला, छोटापन, पतलापन, टेढ़ापन, लिकोरिया, मासिक गड़बड़ी, चेहरे की छाईयां और गुप्त रोगों का सफल ईलाज

## ✚ हकीम एम0शमीम ✚

SC. UM(CAL) Reg.

**होटल समीरा**
काटजू रोड निकट रेलवे स्टेशन
इलाहाबाद

**मिलने का समयः**
प्रत्येक माह 16 से 20 तारिख
सुबहः 9 से रात्रि 8 बजे तक।

वर्ष : 3, अंक : 24, सितम्बर 2003

स्नेह समाज
हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रधान संपादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

कार्यकारी संपादकः
डॉ0 कुसुम लता मिश्रा

सहायक संपादक
रजनीश कुमार तिवारी

संयुक्त संपादक
मधुकर मिश्रा

सलाहकार संपादक
नवलाख अहमद सिद्दीकी

विज्ञापन प्रबंधक
श्रीमती जया शुक्ला

संवाद प्रमुख
नवल किशोर तिवारी

ब्युरो प्रमुखः
गिरिराजजी दूबे

ब्यूरो कार्यालय
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल नगर, भुजौली कॉलोनी, देवरिया ☎(05568)25085
लखनऊ ऑफिस : 282/380, खान fey j lb]dkuijgj lb]y[ kuÅ ☎(0522)-2457452, 2457920

पत्रव्यवहार का पता :
एल.आई.जी.–93, नीमसराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद
मो0: 3155949 फैक्स सं0 : 0532–655565

सम्पादकीय कार्यालय :
एम0टेक कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, पावर हाउस के पास, धुस्सा, इलाहाबाद ☎2552444

# सम्पादकीय

प्रिय पाठकों

नमस्कार

आपके स्नेह और आशीर्वाद के बदौलत हम इस मुकाम पर पहुँचें कि आज हम अपना सिलवर जुबली अंक निकालने की तैयारी कर रहे है। आगामी माह में हम अपने सिलवर जुबली अंक को लेकर आपके बीच हाजिर होगें। हमारा भरपूर प्रयास है कि हमारा सिल्वर जुबली अंक आप सम्मानित पाठकों के लिए यादगार और संग्रहणीय अंक बने। इस पत्रिका को निकालने मूल उद्देश्य ही हैं प्यार और सौहार्द को बढ़ाना। ऐसे में आप लोगों को अपना हमारे प्रति सहयोग और प्रेम बनाए रखना हमें आत्मबल प्रदान करता है।

प्रेस को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ हमारे संविधान में कहा गया है। लेकिन आज हमारे चौथे स्तम्भ का गला घोंटा जा रहा है। किसी नेता के खिलाफ कोई लेख, कविता लिखने वालें साहित्यकारों का दंडित किया जा रहा है और चापलुसी करने वाले साहित्यकारों को पुरस्कारों व पदों से महिमामंडित किया जा रहा है। अभी हाल ही में एक घटना प्रकाश में आयी है कि एक कवि महोदय को वहां के इंस्पेक्टर ने जेल में बंद कर दिया। पूछने पर मालुम हुआ कि वह किसी नेता के खिलाफ कविताओं का संग्रह छपवाने की तैयारी कर रहे थे और तो और कविता छापने वाले प्रेस मालिक को भी न छापने के लिए कहा गया। इंस्पेक्टर महोदय ने उस कवि महोदय को किस जुर्म में बंद किया यह तो नहीं मालुम हुआ लेकिन इसमें उस इंस्पेक्टर की कहीं न कहीं मजबूरी रही होगी या नेता जी को खुश करने का सस्ता और घिनौना रास्ता रहा होगा।

"लोकतंत्र के देश में हुई तानाशाही सवार
मेहनतकश; ईमानदार चक्की पिशत
मलाई खाये लंठराज।
नेता–नेता जपते रहो, मन में राखे खोंट
जिस दिन मौका मिलें, देव पासा पलट।
गॉधी जी कह गये किसान और जवान है देश की शान
मगर आज ये दोनों हीं है सबसे अधिक कंगाल।।

प्यारे दोस्तों मैं कोई कवि नहीं हुई जो दोहे और चौपाईयों का सृजन करूँ। मगर तीर्थराज प्रयाग साहित्यनगरी के असर के कारण थोड़ा बहुत अपने आप बन पड़ा। दोस्तों आप लोग इस चाथे स्तम्भ की इज्ज़त को बरकरार रखिए। जिस दिन यह चौथा स्तम्भ ठह गया, पंगु हो गया उसी दिन यह देश पुनः विदेशी ताकतों के सिकंजे में फंस जाएगा। तब पुनः किसी गॉधी, सुभाष और चन्दशेखर को जन्म लेने पर ही मुक्ति मिलेगी। धन्यबाद

(प्रधान संपादक)

# बेबाक

भ्रष्टाचारियों को प्रश्रय दे रहे है, अटल–आडवाणी। वाजपेयी मंहत परमंहस की मौत पर राजनीति की रोटियॉ सेंक रहे है।

**मुलायम सिंह यादव**
अध्यक्ष, सपा
प्रदेश मुख्यालय पर आयोजित युवा संगठनों के सम्मेलन में।

लघु उद्योग के लिए केंद्र सरकार ऋण पर ब्याज की दर को घटाकर 11 फीसदी तक लाएगी, ताकि देश में और लघु उद्योग इकाइया स्थापित हो।

**तपन सिकन्दर**
केन्द्रीय लघु उद्योग राज्यमंत्री
कोलकाता के एक कार्यक्रम में

10 स्वर्ण जयंती फेलोशीप है। सिर्फ एक बार को छोड़कर कभी पूरे प्रतिभागी नहीं मिले। यही स्थिति दूसरे फेलोशीप की भी है।

**डा. मुरली मनोहर जोशी**
केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी मंत्री
राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी इलाहाबाद में उदघाटन के मौके पर

परमहंस ने अपनी तपस्या, साधना और संघर्ष से देश को महान बनाने का प्रयास किया। परमहंस जी की अंतिम इच्छा को पूरा करने के लिए वह उनकी चिता के सामने यह संकल्प दोहरा रहे हैं। मंदिर निर्माण की सारी बाधाए दूर होगी और श्री राम मंदिर के निर्माण का पथ प्रशस्त होगा।

**अटल बिहारी वाजपेयी**
प्रधानमंत्री
अयोध्या में सरयू तट पर दिवंगत मंहत परमहंस की अत्येष्टि के अवसर पर

बसपा और भारतीय जनता पार्टी केवल उत्तर प्रदेश में ही मिलकर चुनाव लड़ेगी, अन्य राज्यों में नहीं। उत्तर प्रदेश के अनुभव की पुनरावृत्ति का उद्देश्य अन्य राज्यों में पार्टी का आधार विस्तार करना और मजबूती प्रदान करना था।

**सुश्री मायावती**
मुख्यमंत्री, उ0प्र0
भारतीय जनता पार्टी के साथ राष्ट्रीय स्तर पर गठबंधन के सवाल पर शिमला में।

अगले आम चुनाव में भारतीय जनता पार्टी सोनिया गॉधी के विदेशी मूल को मुद्दा बनाएगी। सबसे पहले कांग्रेस ने ही विदेशी मूल का मुद्दा उठाया था, जिसके चलते कांग्रेस का विभाजन हुआ।

**लालकृष्ण आडवाणी**
उप प्रधानमंत्री, एक समाचार चैनल को दिए गए साक्षात्कार में।

प्रदेश सरकार अल्पमत में आ चुकी है और विधानसभा सत्र के दौरान गिर जाएगी। वशर्ते विधानसभा अध्यक्ष केशरी नाथ त्रिपाठी ईमानदारी से काम करें।

**कल्याण सिंह**
पूर्व मुख्यमंत्री
अध्यक्ष, राष्ट्रीय क्रांति पार्टी
लखनऊ के विपक्षी दलों की बैठक में।

## कार्टून

# माया तेरी माया से कोई पार न पाया

✍ उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री सुश्री मायावती गाहे–बगाहे भाजपा प्रदेश व राष्ट्रीय नेतृत्व को जली–कटी सुनाकर, उन्हें झुकाकर अपना हौसला इतना अधिक बुलंद कर लिया कि वह अपने अधिकार की सीमा को लाँघते हुए केन्द्रीय मंत्री व भाजपा के वरिष्ठ नेता जगमोहन को बर्खास्त करने की जिद पर अड़ गयी और अपने सांसदों को लोकसभा में जगमोहन की बर्खास्तगी के लिए विरोध प्रकट करने का निर्देश तक दे दिया।

✍ सरकार पर मंडराते काले बादलों और अपनी हालत पतली देख बहन जी के सारे तेवर आसमान से जमीन पर आ गए। वह अपनी माया को दिखाते हुए एक चतुर, मजे हुए राजनीतिज्ञ व समय की नजाकत को भापकर वह अपनी मांग को वापस ले ली और साथ ही साथ एक तुरूप का पत्ता भी फेंक डाला कि भाजपा और बसपा मिलकर चुनाव लड़ेगी।

स्नेह, ब्यूरो रिर्पोट

अम्बेडकर ग्राम दौरें में अधिकारियों को निलंबन कर, उन्हें सार्वजनिक स्थानोंपर अपमानित कर अपना दबदबा कायम करने वाली उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री सुश्री मायावती गाहे–बगाहे भाजपा प्रदेश व राष्ट्रीय नेतृत्व को जली–कटी सुनाकर, उन्हें झुकाकर अपना हौसला इतना अधिक बुलंद कर लिया कि वह अपने अधिकार की सीमा का लॉघते हुए केन्द्रीय मंत्री व भाजपा के वरिष्ठ नेता जगमोहन को बर्खास्त करने की जिद पर अड़ गयी और अपने सांसदों को लोकसभा में जगमोहन की बर्खास्तगी के लिए विरोध प्रकट करने का निर्देश तक दे दिया। बहन जी का आदेश पाकर बसपा के सांसदों ने आशा से अधिक हंगामा कर डाला। राजग की सहयोगी घटक बसपा के रवैये से सदैव मौनी बाबा का रूप धारण करने वाले, कवि हृदय प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी भी क्रोधित हुए बिना नहीं रह पाए। मौनी बाबा ने मायावती की मांग को खारिज करते हुए स्पष्ट कर दिया कि यह उनका विशेषाधिकार है कि कौन मंत्री रहे और कौन जाए।

उत्तर प्रदेश की माननीया मुख्यमंत्री सुश्री मायावती ने सांस्कृतिक एवं पर्यटन मंत्री श्री जगमोहन को बर्खास्त करने के लिए प्रधानमंत्री को पत्र भी लिख डाला और लखनऊ में पत्रकार वार्ता में जगमोहन को अनाप–शनाप भाषा का प्रयोग करते हुए बर्खास्तगी की मांग पर आ गयी।

प्रधानमंत्री ने उनके पत्र और मांग को नकार दिया। दूसरी तरफ भाजपा के शीर्ष नेताओं की बैठक में प्रधानमंत्री से बसपा से सम्बंध तोड़ लेने की अपील कर दी। लखनऊ में भाजपा विधानमंडल दल के नेता व वरिष्ठ मंत्री श्री लालजी टंडन ने राज्यपाल से भेंट कर नये राजनीतिक गणित पर विचार–विमर्श किया। सरकार पर मंडराते काले बादलों और अपनी हालत पतली देख बहन जी के सारे तेवर आसमान से जमीन पर आ गए। वह अपनी माया को दिखाते हुए एक चतुर, मजे हुए राजनीतिज्ञ व समय की नजाकत को भापकर वह अपनी मांग को वापस ले ली और साथ ही साथ एक तुरूप का पत्ता भी फेंक डाला कि भाजपा और बसपा मिलकर चुनाव लड़ेगी।

इन सबके बावजूद अभी उत्तर प्रदेश की राजनीतिक हलचल कम नहीं हुई है। इन दोनों के संबंधो की रस्सी में एक गांठ स्थायी रूप से पड़ चुकी है जो गठबंधन टूटने के

साथ ही हटेगी। ऐसी संभावना बहुत कम दिख रही है कि भाजपा–बसपा गठबंधन चुनाव तक साथ–साथ चले। अगर चुनाव निकल भी गया तो उसके बाद नहीं। एक लोकोक्ति है कि शेर पर सवारी करने वाला कभी शेर का शिकार भी हो जाता है। यह बहन जी के लिए यथोचित बैठता है। इसे कहते हैं अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे।

केन्द्रीय मंत्री की बर्खास्तगी की बहन जी की मांग उनके स्वभाव, व्यवहार व मर्यादा के खिलाफ साबित हुआ। उनका सारा अहंकार और घमण्ड चकनाचूर हो गया। कुर्सी बड़ी ऊँची चीज है जो न करा दे। बहन जी इस कुर्सी के भय के कारण ही झुकी है। वरना किसकी मजाल जो उन्हें झुका दें। इतिहास गवाह है कि तानाशाहों के अंदर भी भय होता है और यहीं भय उन्हें ले डूबता है। ताज हेरिटेज कारिडोर के मामलें ने यह पुनः सिद्ध कर दिया।

बहन जी बिना शर्त भाजपा नेतृत्व के आगे समर्पण करके बहुत बड़े कूटनीतिज्ञ का परिचय दिया है। राज कूटनीति कहती है कि मैदाने जंग में दुश्मन से घिर जाने पर अपने को सुरक्षित बचा लेना भी बहादुरी का काम होता है। इधर विधानसभा का सत्र 8 अगस्त से 28 अगस्त तक के लिए बढ़ाने से यह लगता है कि बहन जी को अभी भी कुर्सी का खतरा नजर आ रहा है।

जानकारी के मुताबिक ताज हैरीटेज कोरिडोर उन्हीं की स्वीकृति से शुरू हुआ था। लेकिन उन्होंने इस बारे में जानकारी होने से एक सिरे से नकार दिया कि उन्हें कोई जानकारी नहीं है। लेकिन माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेश पर सी.बी.आई की जॉच शुरू हुई। उसी समय पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह ने केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री टी. आर.बालू के साथ बहन जी के पत्राचार को उजागर कर दिया। उस वक्त बहन जी ने पूर्व मुख्यमंत्री को काफी भला–बुरा कहा था और ताज कोरिडोर की जानकारी की बात स्वीकार की। बात को नकारने के बाद जब स्वयं को घिरा पाया और उनकी पोल खुल गयी तो उन्होंने बड़ी निर्लज्जता से स्वीकार कर लिया जो मुख्यमंत्री जैसे पद के लिए शोभनीय नहीं है।

केन्द्रीय मंत्री जगमोहन की बर्खास्तगी की बेतुकी बात से चिढ़ कर प्रधानमंत्री ने मायावती को दो टूक जवाब देते हुए कहा–"जगमोहन को हटाने का सवाल ही पैदा नहीं होता।" तो दूसरी तरफं भाजपा सांसदों और विधायकों द्वारा मायावती सरकार से समर्थन वापस लेने पर सोच–विचार शुरू हो गया। इसको सुनकर उनका सारा खेल विगड़ गया और वह स्वयं को अपने ही बूने जॉल में फंसी हुई पाकर इससे छुटकारा पाने के लिए शेरनी की तरह दहाड़ने वाली मायावती गीदड़ बन गयी।

आखिर बसपा–भाजपा की तकरार फिर सुलह से प्रदेश की जनता इनके आचरण के बारे में क्या सोचेगी। इनके आचरण के विषय में सपा नेता अमर सिंह की टिप्पणी–"यह पति–पत्नी का झगड़ा है जो दिन में झगड़ते हैं और रात को एक हो जाते है।" बहुत ही सटिक जान पड़ती है। इन दोनों पार्टियों को जनता क्या सोचेगी इसकी कोई चिंता नहीं है। इसी संदर्भ में प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और राष्ट्रीय क्रांति पार्टी के अध्यक्ष कल्याण सिंह की टिप्पणी बडी सटीक है–भाजपा–बसपा का यह विवाद महज ड्रामा था। ये दोनों दल सत्ता के लिए कुछ भी कर सकते है।

लेकिन बात चाहे कुछ भी हो भाजपा की घुड़की के समक्ष बहन जी के नतमस्तक होने से उनकी साहसिक, निडर कार्यो के समक्ष एक भयभीत आत्मा और सत्तालोलुप व्यक्तित्व के रूप में जनमानस में ला खड़ा कर दिया है। दूसरी ओर भाजपा भी सत्ता सुख के लिए समर्थन जारी रखे हुए है जबकि भाजपा का एक–एक कार्यकर्ता बसपा से समर्थन वापसी की मांग कर रहा है। लेकिन भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को अपनी कुर्सी की परवाह है कार्यकर्ताओं की नहीं। कार्यकर्ताओं से काम तो चुनाव के समय पड़ेगा जिसमें अभी काफी समय बाकी है देखा जाएगा। उन्हें चुनाव के समय कोई घुट्टी पीला दी जाएगी। राममंदिर, समान नागरिक संहिता, धारा 370 को हटाना, गौवंध, ज्ञानवापी और मथुरा जैसे झुनझने पकड़ा कर पूर्ण बहुमत जनता से मांगने को कह दिया जाएगा।


**ज्योतिष संबंधी**

**आदिशक्ति उपासक ज्योतिषाचार्य**

प्रेमविवाह, नौकरी, व्यवसाय,बरकत,कर्ज, संतति, गृहकलेश, मानसिक बाधा, करनी, तलाक, पदोन्नति,कोर्ट, शनि पीड़ा, राजनीतिक, वास्तुदोष, शिक्षा, शत्रुमुक्ति, विदेश, विवाह, हस्तरेखा कुण्डलीविद

शुक्ला जी, म.न. 1041, बाबाबाग आर.के. कोचिंग सेन्टर गली के अन्दर, समीप बलुआघाट चौराहा, इलाहाबाद समयः 8 से 8 बजे तक

**3 दिन में फरक न पड़े तो पैसे वापस।**

# कौशाम्बी चिकित्सा के क्षेत्र में विकास के लिए संघर्षरत

**प्रमोद तिवारी**, संवाददाता

कौशाम्बी महोत्सव में महामहिम राज्यपाल के साथ डॉ0 एच.आर.आजमी

इलाहाबाद मंडल में इलाहाबाद जनपद से काटकर नवनिर्मित किए गए कौशाम्बी को बने हुए 6 वर्ष हो चुके हैं लेकिन जिला बन जाने मात्र से किसी क्षेत्र का विकास नहीं होता है। कौशाम्बी जनपद आज भी विकास की वाट खोज रहा है। किसी भी देश, राज्य व जिला की विकासशीलता का धोतक वहाँ की शिक्षा, चिकित्सा, सड़के, बिजली–पानी होती है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण है चिकित्सा, चिकित्सक व चिकित्सालय तक पहुँचने के लिए वहाँ की सड़के। कौशाम्बी जनपद में इन दोनों चीजों का अभाव है। इसी संदर्भ मे हमारी टीम ने वहां के मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. एच.आर.आजमी से बातचीत की।

कौशाम्बी को बने 6 साल हो गये मगर वहाँ आज तक जिला चिकित्सालय का निर्माण नहीं हो पाया है। जिसके कारण चिकित्सकों को विभिन्न प्रकार की समस्याओं से रूबरू होना पड़ता है। कौशाम्बी में सर्जनों की कमी भी कौशाम्बी जनपद के चिकित्सा को पीछे करती है। एक तरफ अन्धता निवारण अभियान चलाया जा रहा है तो दूसरी तरफ ऑख के आपरेशन के लिए आपरेशन थिएटर ही नहीं है। साथ ही नेत्र सहायको की कमी कोढ़ में खाज का काम कर रही है। कौशाम्बी में न तो टीवी हास्पिटल है, न मलेरिया यूनिट, आपरेशन के लिए महत्वपूर्ण ब्लड बैंक भी नहीं है।

कौशाम्बी में जुलाई 02 में मुख्य चिकित्सा अधिकारी का पद भार ग्रहण करने वाले डॉ0 एच.आर.आजमी निरन्तर अपनी देख रेख में चिकित्सकीय कार्यो को साधानाभाव के बावजूद बखूबी अंजाम देने में प्रयासरत है। इनका कार्य वास्तव में सराहनीय है। वे अपनी देखरेख में बिना आपरेशन थिएटर के कैम्प लगवाकर ऑखों का सफल आपरेशन व लेन्स लगवाने की व्यवस्था कर रहे हैं। विगत वर्ष कड़ा, सिराथू, मंझनपुर, कनैली, नेवादा, चायल, मूरतगंज और सरसावन में कैम्प लगाकर उपरोक्त आपरेशनों को अंजाम दिया गया। स्टाप और नर्स की कमी के बावजूद डॉ0 आजमी वैकल्पिक व्यवस्था कर सरकारी योजनाओं को क्रियान्वित कर रहे हैं। वहाँ 2001–02 में 42.5 प्रतिशत तथा 2002–03 में 70 प्रतिशत नसबंदी कराया गया। कुष्ठ विभाग को चिकित्सा विभाग में बदलने के प्रयास के कारण इसका भविष्य अंधकारमय है। कुष्ठ रोग प्रभारी डॉ0 एस.एन. उपाध्याय के अनुसार 2001–02 में कुष्ठ रोगिया की संख्या 5.2 प्रतिशत प्रति दस हजार, 2002–03 में घटकर 4.1 प्रतिशत प्रति दस हजार हो गयी।

डॉ0 आजमी के नेतृत्व में 177 झोला छाप डॉक्टरों को पकड़ा गया। जिसमें 33 डाक्टरों के खिलाफ एफ.आई.आर दर्ज की गयी। शेष के खिलाफ कार्यवाही की जा रही है। 9 दिसम्बर 2002 को विशाल स्वास्थ्य मेला, महेवा घाट में लगाया गया। इसका प्रसारण 20 दिसम्बर 02 को टी.वी. पर किया गया। 2002–03 में मातृत्व लाभ योजना प्रारम्भ हुई जिसमें 4912 गर्भवती महिलाएं लाभान्वित हुई। मार्च 2003 तक 1723 विकलांगो को लाभ प्राप्त हुआ। 1995,96,97 व 98 में चयनित अम्बेडकर ग्रामों में स्वास्थ्य योजनाओं को कार्यान्वित कराया गया। मंडलायुक्त व जिलाधिकारी के दौरे में डॉ0 आजमी के कार्यो को संतोषप्रद बताया गया।

यू.पी.एस.डी.एस. 2001 से संचालित हुई। जिसमें प्रत्येक बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार को विशेषज्ञों की सेवाएं चिकित्सालयों में प्रदान की जाती है। 2002 से सिफ्सा संचालित हुई इसमें ए.जी.एस.एस., पी.सी.डी.एफ के एन. जी.ओ कार्य कर रहे है। कौशाम्बी में पल्स पोलियों कार्यक्रम का भी काफी प्रभावशाली ढंग से संचालन किया गया। जून 03 तक अन्धता निवारण कार्यक्रम के तहत 95 मोतियाबिन्द आपरेशन किए गये।

16 जून 03 से 30 जून तक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान के तहत टीमें बनाकर रोगियों का सर्वे अभियान चला तथा 1 जुलाई 03 से 15 जुलाई तक शिविरों को लगाया गया।

6 अप्रैल 2003 को कौशाम्बी महोत्सव में डॉ0 आजमी के कार्यो को महामहिम राज्यपाल महोदय ने भी सराहना की।

# दूसरे पं. मदन मोहन मालवीय श्री कमलेश सिंह

स्नेह ब्यूरो रिपोर्ट

समाज में कोई भी क्रांति लाने व पवित्र कार्य करने वाली महान विभूतिया यदा–कदा ही इस धरती पर जन्म लेती है। भारत की पवित्र धरती पर कोई न कोई संत समाज में क्रांति लाने के लिए अवतरित होती रही है। समाज के विकास की डोर शिक्षा पर ही टिकी होती है। जब तक हम शिक्षित नही होगें हमारा समाज, देश विकास नहीं करेगा। पूर्वांचल में शिक्षा के प्रचार–प्रसार के लिए पं0 मदन मोहन मालवीय, बाबा राघव दास के प्रयास को भुलाया नहीं जा सकता है। इसी कड़ी में महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व0 जगपत सिंह सिगरौर के पुत्र कमलेश सिंह के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है।

अपने पिता स्वतंत्रता संग्राम सेनानी , कर्तव्य परायण, सादा जीवन और उच्च विचारों वाले स्व0 जगपत सिंह सिगरौर द्वारा 1964 में मकनपुर गांव में गिरधारी सिंह जूनियर हाईस्कूल की कड़ी को इतना अधिक फैला दिया कि आज यह शिक्षा का सिरमौर साबित हो रहा है। अपने पिता के इस छोटे से बीज को अमली जामा पहनाया उनके यशस्वी एवं कर्मठ तथा बात के धनी पुत्र कमलेश सिंह ने। सुलेम सराय की खाली जमीन पर फैले अधियारें को गौर से परख कर महान विभूति कमलेश सिंह ने जगपत सिंह सिगरौर बालिका इंटर कॉलेज एवं जगपत सिंह सिंगरौर डिग्री कॉलेज की स्थापना की जो इलाहाबाद मंडल का एक ख्याति प्राप्त संस्थान हो गया। इस कॉलेज की पूरे प्रदेश में अपनी एक अलग पहचान है।

> इलाहाबाद जो कभी टकासेर भाजी और टकासेर खाजा के लिए प्रसिद्ध था वहॉ शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए एक से एक व्यवस्था व साधन, संस्थान देने वाले जे.पी. ग्रुप के चेयरमैन श्री कमलेश सिंह को दूसरा पंडित मदन मोहन मालवीय कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

**प्रबंधक श्री कमलेश सिंह**

यहॉ लगभग दस हजार छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। कॉलेज के प्रबंधक श्री कमलेश सिंह के कुशल नेतृत्व में यह कॉलेज नित नयी ऊँचाइया छू रहा है।

इस कड़ी को आगे बढ़ाते हुए कानपुर विश्वविद्यालय से बी.एड. पाठ्यक्रम भी इस सत्र से 2003–04 से प्रारम्भ हो गया है। कम्प्यूटर शिक्षा के लिए एन.आई.आई.टी., सी.ए.टी.एस. का प्रशिक्षण संस्थान भी जे.पी. नगर में चलाया जा रहा है।

पूर्वांचल के महान विभूति संत श्री कमलेश सिंह इंजीनियरिंग कॉलेज, जे.के.एस.एस. इंस्टीट्यूट ऑफ कम्प्यूटर सांइस, प्राविधक विश्वविद्यालय लखनऊ, उ0प्र0 से कागजी कार्यवाहियों को अमली जामा पहनाने में लगे हुए है। शायद अगले सत्र से यह प्रारम्भ भी जाए। श्री सिंह की शिक्षा के प्रति लालसा अभी यही खत्म नहीं होती वे आगे इलाहाबाद के प्रथम निजी मेडिकल कॉलेज खोलने के लिए भी प्रयासरत है। इसके लिए वे जमीन की खरीददारी भी कर रहे है।

इलाहाबाद जो कभी टकासेर भाजी और टकासेर खाजा के लिए प्रसिद्ध था वहॉ शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए एक से एक व्यवस्था व साधन, संस्थान देने वाले जे.पी. ग्रुप के चेयरमैन श्री कमलेश सिंह को दूसरा पंडित मदन मोहन मालवीय कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

उच्च शिक्ष के बारें में गहन अध्ययन और चिन्तन के लिए कमलेश सिंह सदैव प्रयासरत रहे है। इसके लिए वे 21 मई 2000 को रूस, कनाडा और फिनलैण्ड की यात्रा भी किए और वापस लौटकर यात्रा के दौरान मिले अनुभवों को शिक्षकों और छात्रों के बीच बॉटने का काम भी किए।

संत श्री कमलेश सिंह के कुछ संत वचन– नौजवानों को त्रिशुल दीक्षा नहीं, बल्कि बेहतर शिक्षा चाहिए।

आज के समय में धर्म नहीं

# दीपक की एक लौ जो सुरज बन रही है

दीपक की एक लौ जो सूरज बन रही है

यह वही इलाहाबाद है जहॉ पर कभी टकासेर भाजी व टका सेर खाजा मिला करता था। इलाहाबाद ने जहॉ बड़े–बड़े साहित्यकारों को जन्म दिया है वहीं नेहरू और शास्त्री जैसे प्रधानमंत्री भी दिए है। और अब यही इलाहाबाद स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जगपत सिंह सिगरौर व उनके यशस्वी पुत्र कमलेश सिंह को भी दिया है।

मुख्य शहर से पश्चिम में सैकड़ो किलोमीटर के बीच में फैले गहरे अंधाकर को दूर करने के लिए स्वतत्रंता संग्रोम सेनानी जगपत सिंह सिगरौर ने 38 वर्ष पूर्व 1964 में गिरधारी सिंह जूनियर हाईस्कूल की स्थापना की। तीन साल के अथक प्रयासों के बाद 1967 में इस विद्यालय को हाईस्कूल की मान्यता मिली। 1971 ई में इंटरमीडिएट के साथ ही साथ सरकारी अनुदान भी मिल गया। इस विद्यालय की अपार लोकप्रियता एवं यहा हीं शिक्षा शैली से प्रभावित होकर दूसरे जिलों से भी सैकड़ो छात्र यहॉ अध्ययन करने आते है।

वर्ष 1983 में संस्थापक जगपत सिंह के निधन के बाद स्व0 सिंह के यशस्वी पुत्र कमलेश सिंह ने संस्था की गरिमा को बरकरार रखते हुए अपने पिता के अधूरे सपनों को पूरा करने में चॉर चाद लगा दिए। कमलेश सिंह चंद ही दिनों में शिक्षा के चमकते हुए सितारे जैसे अपना यश चारों ओर फैलाने लगे। कुछ वर्षो के अथक मेहनत और अथक परिश्रम करके दिन रात को एक करके इन्होंने शिक्षा के जगत में एक इतिहास रच दिया। सैकड़ों वर्षो की दूरी को महज तीन चार वर्षो में ही स्नातक, परास्नातक, इंजीनियरिंग कॉलेज, बालिका इंटर कॉलेज, बी.एड. संकाय जैसे शिक्षा के संस्थान देकर इलाहाबाद में शिक्षा जगत में एक क्रांति ला दी। आज शहर तो शहर दूर दराज के गांव के लोग भी सिंगमौर के नाम से परिचित है। श्री सिंह ने अपनी शिक्षा रूपी प्रकाश जो एक दीपक की तरह मकनपुर से प्रारम्भ हुआ था आज पूरे इलाहाबाद शहर के साथ ही साथ प्रदेश को सूरज

## मजूर की रोटी

राजेन्द्र कुमार शुक्ल

पकवानों में स्वाद कहॉ वह,
जो गरीब की रोटी में।
धनवानों का दूषित अर्जन,
चन्द लाभ हित करता शोषण।
काला धन झूठे फरेब से,
संग्रह करता तीव्र वेग से
कुसंस्कार के दिखते लक्षण,
उनके बेटे–बेटी में।।
पकवानों में ..................रोटी में।।
तन मजूर का स्वेद बिन्दु धर,
कर्मठ पॉव जमे धरती पर।
श्रम में तत्पर मनोयोग से,
काया निर्मल सभी रोग से।
भूख प्यास की चिन्ता छोडे,
करता बसर लंगोटी में।।
पकवानों में ...............रोटी में।।
चाहे धरे कुदाल फावडा,
चाहे रिक्शा खींचे।
चाहे गाडी के संग दौडे,
घिसट चले फिर पीछे।।
थक कर चूर जुटा पटरी पर,
आटा आलू उपली कण्डा।
नमक तेल मिर्चे में सनकर,
बाटी गर्म पर चोखा ठण्डा।।
छककर भोजन क्षुधा तृप्तकर।
बर्तन भाडे का दूर बवंडर।।
इस भोजन का स्वाद अनूठा,
स्वाद भला क्या बाटी में।।
पकवानों.................... रोटी में।।
आज बसर हो कल की चिन्ता
व्यर्थ उन्हें है लगती।
कैसा संग्रह कितना संग्रह,
बातें अर्थ नहीं रखती।।
आज यहॉ कल कहॉ हो डेरा,
बंधे नहीं हैं खूँटी में।।
पकवानों में स्वाद कहॉ वह
जो गरीब की रोटी में।।

# सकारात्मक चिन्तन की अपरिहार्यता

पं0 हरिमोहन मालवीय
अध्यक्ष, हिन्दुस्तानी एकेडेमी

वैश्वीकरण, बाजारवाद और सूचना–क्रान्ति के दुष्प्रभावों की चर्चा आज साहित्य जगत् में व्यापक रूप से हो रही है। साथ ही मानव जीवन पर पड़ने वाले इनके दुष्प्रभावों पर तर्क–वितर्क भी चल रहे हैं। फलस्वरूप वैचारिक शून्यता की विषम स्थितियों से विचारक ओर सर्जक व्यथित और चिन्तिन हैं कि मानवमात्र भौतिक समृद्धि प्राप्त करने की होड़ में अब लग गया है और मानवीय सरोकार उपेक्षित हो रहे है। वैश्वीकरण के प्रभावों के कारण भाषिक स्तर पर अंग्रेजी का वर्चस्व सर्जक मन को खिन्न, व्यथित एवं क्षुब्ध करता जा रहा हैं। फलतः इस अभूतपूर्व परिवर्तन का साक्षी रचनाकार ज्ञानात्मक संवेदन और संवेदनात्मक ज्ञान की संरक्षा के निमित्त रचनात्मक हस्तक्षेप के लिए आतुर है। वह अरचनात्मक राजनीति से ग्रस्त इस कठिन समय में कुछ सार्थक रचने के लिए आकुल हो रहा है।

परिवर्तनशील युग में पश्चिमी पूँजीवादी सर्वग्राही तन्त्र, सूचना प्रौद्योगिकी की विस्फोटक सत्ता और मुक्त बाजार की चकाचौंध के बीच मानव–संबंधों पर संकेन्द्रित रचनात्मकता की अनिवार्यता को नकारा नहीं जा सकता। कुछ लोग संचार क्रान्ति और यांत्रिकीकरण की आपाधापी के बीच साहित्य के अस्तित्व को लेकर प्रश्नाकुल हैं। लेकिन अच्छा साहित्य कठिन दौरों में लिखा जाता रहा है। मानव नयी समस्याओं और नयी चुनौतियों का सदैव सामना करता आया है। युग–परिवर्तन के साथ नयी–नयी समस्याएं जन्म लेती जा रही है। वैज्ञानिक और औद्योगिक क्रान्ति रही हो या राजतन्त्र के बरक्स लोकतांत्रिक क्रान्ति, मानव ने परिवर्तन के साथ अपने तेवर बदले हैं और अमानवीय व्यवस्थाओं का उच्छेदन करके नवयुग की स्थापनाओं और मान्यताओं को अपरिहार्य बनाने का आग्रह और प्रयत्न किया है।

विश्व और समाज कभी विकट समस्याओं से विरत नहीं रहा। मानव में चुनौतियों को स्वीकार करने और उनसे जूझने की सामर्थ्य रही है। क्या आज यह सामर्थ्य चुक गयी है? मानव तब चुका हुआ प्रतीत होगा जब वह नकारात्मक चिन्तन से ग्रस्त और पस्त होकर अपनी सर्जनात्मकता से विरत होगा।

आज जबकि कल्पनातीत नये प्रश्नों का दंश सारी मानवता को दंशित कर रहा है। ऐसी स्थिति में साहित्य की आभ्यन्तरिक परिवर्तनकारी शक्ति को पहचानने की आवश्यकता है।

आज के रचनाकार का आन्तरिक परिवेश विरोधा और तनाव से ग्रस्त है।

यह विरोध और तनाव यदि रचनात्मक न बन पाया और जीवन के वास्तविक और अंतरंग अनुभवों की छटपटाहट को सर्जनात्मक आवेग के साथ स्फुरित न कर पाया तो निश्चय ही यह अधिक चिन्ताजनक स्थिति होगी।

आज जो पतनोन्मुख परिवेश दृष्टिगत होता है उसमें बदलाव के लिए मात्र सर्जनात्मक चिन्तन और लेखन की आवश्यकता है। हमें संकल्पित होना होगा कि सकारात्मक सोच कहीं आज की आपाधापी में तिरोहित न हो जाय। ज्ञान–विज्ञान, कला और साहित्य का विकास हताशा, कुंठा, संत्रास और अवसाद से नहीं होता। यह विकसित होता है। सकारात्मक सर्जनात्मक चिन्तन से मानव की जिज्ञासा, मेधा, संवेदन, नयी सर्जना की आधारभूमि रहें हैं। ज्ञानात्मक विकास की यह अनिवार्य शर्त है कि हम जीवन–सत्य और जगत् सत्य के प्रति प्रतिश्रुत हों और जो नये बवंडर और झंझावात मानवता को जड़ से उखाड़ने के लिए विश्व क्षितिज पर उमड़ते–घुमड़ते दिखायी पड़ रहे हैं उनके बीच जूझे और जूझते हुए उन विकल्पों की तलाश करते रहें जो विकल्प मानवता के लिए निर्विकल्प हो।

**शीघ्र प्रकाश्य** **शीघ्र प्रकाश्य** **शीघ्र प्रकाश्य**

## सुप्रभात

### कवि एवं उनकी कविताएं (भाग 1)

नवोदित कवियों का सचित्र परिचय सहित उनकी कविताओं का अनूठा संकलन सहयोगी आधार पर प्रकाशित किया जा रहा है जो कई खण्डों में छपेगा। इसी प्रकार कहानी एवं लघुकथाओं का भी अलग–अलग संग्रह छपेगा। कृपया अपनी रचनाएं हमें निम्न पते भेंजे अथवा सम्पर्क करें।

मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज', एल. आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

**अथवा**

एम.टेक. कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, धुस्सा पावर हाउस के पास, धुस्सा,(झलवा) इलाहाबाद, मो0 : 3155949

# राममंदिर निर्माण के प्रणेता परमहंस रामचन्द्र

✍ देश के प्रधानमंत्री तक को सबक सिखाने का दंभ भरने वाले चंद्रशेखर तिवारी का जन्म 1912 ई0 में बिहार राज्य के छपरा जिले के सिजिनपुर गांव में एक साधारण ब्राहमण परिवार में हुआ था।

✍ अपने सेवा भाव के कारण ही झडूले बाबा के अभिन्न शिष्यों में कुछ ही सालों में शुमार किए जाने लगे। झडूले बाबा को उनसे इतना अधिक लगाव हो गया कि वे अपने मृत्यु से पूर्व उन्हें अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिये। इसके बाद चंद्रशेखर तिवारी साधु वेशधारी परमहंस अयोध्या के गिने–चुने संतों में शुमार किए जाने लगे। वे आदतन अयोध्या के महत्वपूर्ण धार्मिक आयोजनों में अवश्य पहुँचते थे।

स्नेह, ब्यूरो रिर्पोट

चंद्रशेखर तिवारी के वाल्यावस्था से ही धर्म और आध्यात्म के प्रति रूझान ने उन्हें इस स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया कि यदि अयोध्या के बड़े कार्यक्रमों में अनुपस्थित रहे तो कार्यक्रम को अधूरा माना जाता था। उनकी एक आवाज पर नेताओं अधिकारियों की नींद उड़ जाया करती थी। देश के प्रधानमंत्री तक को सबक सिखाने का दंभ भरने वाले चंद्रशेखर तिवारी का जन्म 1912 ई0 में बिहार राज्य के छपरा जिले के सिजिनपुर गांव में एक साधारण ब्राहमण परिवार में हुआ था। वे अपने पिता मगरेन तिवारी के तीसरी औलाद थे।

लोग कहते है कि बपचन में चंद्रशेखर तिवारी का मन पढ़ाई में नहीं लगता था। वे क्षेत्रीय धार्मिक आयोजनों में अक्सर भाग लिया करते थे। उनका रूझान धीरे–धीरे धर्म के प्रति बढ़ता गया और वे मंदिर में जाकर भजन–पूजन करना प्रारम्भ कर दिया। लगभग दस वर्ष की उम्र में ही अपने गांव के पास के एक राम मंदिर के मंहत राम किशोर दास से साधु की मंत्र दीक्षा ले ली और उन्हीं के साथ रहने लगे। वह कलकत्ता में मखलबी नामक स्थान पर अपने गुरू से धर्म और अध्यात्म की शिक्षा ग्रहण किए। वहीं से घूमते–घामते चित्रकूट पहुँच गये। यहाँ जानकी कुंड, कनक गुफा के आश्रम मेंइनकी शिक्षा–दीक्षा जारी रही। लगभग 18 वर्ष की उम्र में 1935 में अयोध्या आ गए और सरयू तट पर रामघाट स्थित श्रीराम किंकर दास की छावनी पर रहने लगे। उनके सेवा भाव से यहां के संत हमेशा प्रसन्न रहने लगे थे। अपने सेवा भाव के कारण ही झडूले बाबा के अभिन्न शिष्यों में कुछ ही सालों में शुमार किए जाने लगे। झडूले बाबा को उनसे इतना अधिक लगाव हो गया कि वे अपने मृत्यु से पूर्व उन्हें अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिये। इसके बाद चंद्रशेखर तिवारी साधु वेशधारी परमहंस अयोध्या के गिने–चुने संतों में शुमार किए जाने लगे। वे आदतन अयोध्या के महत्वपूर्ण धार्मिक आयोजनों में अवश्य पहुँचते थे। धीरे–धीरे अपनी प्रतिभा और व्यवहार कुशलता के कारण वह दिगंबर अखाड़े के मंहत सुखरामदास के काफी करीबी बन गए। उनकी धर्म और आध्यात्म के प्रति गहरी आस्था के परिणाम ने दिगंबर अखाड़े के संत सुखरामदास ने अपनी बीमारी के दौरान इनको अपना सादिक शिष्य बना लिया और बाद में दिगंबर अखाड़े का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

अखाड़े का मंहत होने के बाद उनमें गंभीरता के साथ–साथ मानवता के प्रति प्रेम बढ़ता गया। अयोध्या के पुराने संतो का कथन है कि अखाड़े तक पहुँचने वाले हर आमो खास को वह बराबर समझते थे और सबके साथ समान व्यवहार उनकी आदत थी। छोटा बड़ा का भेदभाव दिगंबर अखाड़े में उनके रहते नहीं हो सकता था।

उनकी व्यवहारिकता का ही परिणाम था कि उनकी अस्वस्थता की खबर फैलते ही अयोध्या का हर नागरिक उनके हाल जानने के लिए उनके पास पहुँचना चाहता रहा। उनके सैद्धातिक विरोधी भले ही रहे हो लेकिन व्यवहारिक कोई नहीं।

वह अपनी तर्क शक्ति के द्वारा अपनी बात को मनवाने के लिए मजबूर करते थे। चाहे राममंदिर आंदोलन का ओजस्वी भाषण रहा हो या किसी धार्मिक सभा में उनका प्रवचन अपनी भाषण शैली के जरिए आम आदमी को आकर्षित करना भी उनकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक थी। उनके पास हमेशा विद्वान, बुद्धिजीवियों और दार्शनिक पहलुओं पर चिंतन करने

वालों की एक महफिल जरूर हुआ करती थी।

# राममंदिर के लिए रामचंद्रदास परमहंस का सफरनामा–

1. 1949 में विवादित स्थल पर मूर्ति स्थापना के बाद वहाॅ दर्शन–पूजा अर्चन को लेकर 5 दिसंबर 1950 को परमहंस ने सिविल जज फैजाबाद के वहां बाद दायर किया।

2. लगभग 35 साल तक इस मामले में कोई फैसला न हो पाने के क्षुब्ध परमहंस ने 1985 में अपना मुकदमा वापस ले लिया।

3. 60 के दशक में दिगंबर अखाड़े का मंहत होने के बाद उनकी लड़ाई में तेजी आयी।

4. 1965–66 के दौरान स्वामी चिन्मयानंद के प्रयास के बाद गठित विश्व हिंदू परिषद के कार्यो में 80 के दशक में सक्रिय हुए।

5. 7 अक्टूबर 1984 को रामजन्म भूमि मुक्ति के लिए लाखों लोगों ने एक साथ संकल्प लिया।

6. 21 जनवरी 1986 को ताला खुल जाने के बाद आंदोलन में तेजी आयाी।

7. 1989 में मंदिर आंदोलन के लिए श्रीराम जन्मभूमि न्यास का गठन किया गया। इसके पहले अध्यक्ष जगदगुरू रामानंदाचार्य शिवरामाचार्य थे। उनके मृत्योपरान्त परमहंस कार्यकारी अध्यक्ष बने और मृत्योपरान्त तक बने रहे।

8. 1990–92 के दौरान हुए आंदोलन में उन्होंने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

9. 6 दिसम्बर 92 को विवादित ढांचा ढहाने के आरोपी बने। इसके बाद राममंदिर के प्रति उनका नायकत्व उभरकर सामने आ गया।

10. 15 मार्च 2002 को आयोजित होने वाले शिलादान को लेकर वह सुर्खियों में आ गए। वह आत्मदाह तक धमकी दे दी।

एक उदार चेता संत, विद्वान और सफल व्यवहारिक जीवन वाले परमहंस स्वभाव से खासे गुस्सैल भी समझे जाते थे। जब वह एक बार कोई बात कह देते थे तो उसे पूरी करने के लिए उन्हें जो कुछ भी करना पड़े उसे पूरा करने के लिए तैयार रहते थे।

12. मंदिर आंदोलन के इस पुरोधा के लिए विश्व हिंदू परिषद सहित दूसरे संगठन हमेशा नतमस्तक रहे।

# रिम–झिम बरसा पानी

रोहित कुमार पाल

कक्षा–6

रिम–झिम; रिम–झिम बरसा पानी,
लोगों के दिल को भाया है पानी
बच्चे खेले इस बरसात के पानी
बरसात आयी लायी पानी
इस जग में है जीवन पानी
लोगों के दिल को भाया है पानी
बादल छाया बरसा पानी
घर–घर सब के उतरा पानी
जग में आयी हरियाली
लायी खुशहाली पानी

## कड़वा सच

रूही, कक्षाः 10

**परीक्षा**–विद्यार्थियों की शक्ति नापने का साधन
**टाई**– फांसी लगाने का फन्दा
**थियेटर**– कलयुग का मन्दिर
**जेल**– बिना भाड़े का मकान
**मृत्यु**– बिना पासपोर्ट की स्वर्ग यात्राा
**दुःख**–भगवान को यादन करने का मौसम
**श्मसान**–जिन्दगी का अन्तिम स्टेशन
**पेट्रोल**–गाड़ी के पीने की चाय
**चिन्ता**– वजन कम करने की सस्ती दवा
**चाय**–कलियुग का अमृत
**झगड़ा**–वकील का कमाऊ बेटा
**घड़ी**–एक हाथ की हथकड़ी
**आतंकवादी**– कलियुग का यमदूत
**ऐनक**– पकड़ कर रास्ता दिखाने का यंत्रा
**दंगा**– नेताओं की लाटरी
**दहेज**– दूलहन की जिन्दा मौत
**दूल्हा**– एक ऐसा इंसान जिसे शादी के जुर्म में गदहे के बड़े भाई घोड़े पर बैठकर जुलूस निकाला जाता है।

# प्यारी मम्मी–प्यारी मम्मी

संस्कृति द्विवेदी,

प्यारी मम्मी–प्यारी मम्मी मान जाओ
हम ना रूठेगें कभी ये जान जाओ
दादा–दादी आते हैं तो हमसे प्यार जताते है
तुम तो बस हम पर हुकुम ही चलाती हो
पिताजी तो मेरे मुझे कभी नहीं रूलाते है
पर तुम तो मुझको रोज ही रूलाती हो
पिताजी तो रूठने पर गाड़ी से घूमाते है
तुम तो मेरे रूठने पर मुंह ही फुलाती हो
उस पर भी ए गुस्सा मुझे बहुत सताता है
अब भी ना मानी तो हम भी रूठ जाएगें
और डोली में बैठकर अपने ससुराल भागले जाएगें।

धारावाहिक उपन्यास

# दिल का पैगाम

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

तू आ गया। यह सब तेरी ही करामात है। तू बता मेरी बेटी कहॉ है? तू अभी भाग जा यहॉ से। आई किल यू।

क्यों खड़ी हैं आंटी, लाइए चाकू, रिवाल्वर और मार डालिए मुझकों, आपको संतुष्टि मिल जायेगी।

सावन बेटा, तू ही बता, मैं क्या करूँ। उसे कहां खोजू । वह ऐसी लड़की नहीं थी। मैंनें उसे पूरी छूट दे रक्खी थी। अगर उसे कोई लड़का पसंद था तो हम से कहती। अगर लड़का सही होता, उनमें सच्चा प्यार होता तो शादी करने में क्या हर्ज था।

## पूर्व कथा

अनिल व सावन बहुत ही घनिष्ठ मित्र है। अनिल की दोस्ती साथ पढ़ने वाली, लड़की अनु से होती है, तीनों कम्प्यूटर कोर्स करते है। अनिल और अनु की दोस्ती प्रेम का रुप ले लेती है, परन्तु एक–दूसरे का पता मालुम न होने के कारण दूरियां बन जाती है। सावन किसी तरह से अनु के घर का पता ढूढता है। वहीं सावन को मोना नामक एक लड़की मिलती है। दो दिन की मुलाकात में ही दोनां के बीच प्रेम पनप जाता है। वे अनिल की बुआ की लड़की बबली के द्वारा मिलते है। सावन, अनिल, अनु और मोना कोर्ट मैरिज करते है। सावन अनु और अनिल को अपने दोस्त के पास भेज देता है और स्वयं अनिल के घर अपने जन्मदिन की पार्टी में सरीक होने उसके घर जाता है। वह अनिल के घर वालों को अनिल को नौकरी करने जाने को बताता है। वहीं डॉ0 रेखा अपने प्रेम के बारे में बताती है। **और अब आगे....**

## तेरहवीं किस्त

अनु के शाम तक घर न पहुँचने पर उसके घर खलबली मच गयी। वैसे तो सावन फोन पर मि0 मनोज पाण्डेय को अनु के बारें में बता चुका था फिर भी उसे डर था कि कहीं वे लोग मेरे पास न आवें।(अन्ततः वही हुआ। मि0 एस0 एन0 सिंह, मि0 मनोज पाण्डेय सावन के कमरे पर आते हें।)

मि0 मनोजः– सावन, अनु के बारे मे तुम्हें कुछ पता है?

सावनः–(अनभिज्ञता जाहिर करते हुए) सर, मैने तो उसे कई महीनों से देखा भी नहीं है। कब से नहीं है।

मि0 मनोजः– कल से।

सावनः– लेकिन अनु तो ऐसी लड़की नहीं है। आप घबराइए नहीं अंकल। हो सकता है कि कोई बात हो गयी हो।

मि0 मनोजः– सावन, कुछ पता तुम भी लगाओं (ऑखो से इशारा करते हुए।)

सावनः– अंकल, दोस्तों से मैं भी पता करता हूँ। जहॉ भी होगी, उसे हमलोग अवश्य ढूँढ निकालेंगे।

(मि0 एस0 एन0 सिंह सावन की बातों का जवाब नहीं देते। उन्हें तो अपनी इज्जत का डर था। सावन से कुछ उम्मीद थी, वह भी– ।)

दूसरे दिन सावन अनु के घर जाता है। अनु की मम्मी सावन को देखते ही——

अनु की मम्मीः– तू आ गया। यह सब तेरी ही करामात है। तू बता मेरी बेटी कहॉ है? तू उस दिन सर्विस के बहाने आया था तभी मैं समझ गयी कि जरूर दाल में कुछ काला है। तू अभी भाग जा यहॉ से। आई सेज , जस्ट यू गेट आउट। नेवर सीज इन दीस लेन। आई किल यू।

सावनः– (धैर्य का परिचय देते हुए) आंटी आप बेवजह मुझ पर शक कर रही हैं। जरा ठंडे दिमाग से सोचिए, चोर कभी स्वयं थाने जाता है। अगर मैने ऐसा किया होता तो क्या आपसे मिलने आता, कदापि नहीं। मैं उसे अपनी धर्म बहन मानता हूँ। वह मुझे भइया कहती थीं। एक भाई के नाते और कल अंकल के कमरे पर आने के कारण ,यहॉ जानने चला आया। वरना मेरे को क्या पड़ी, कोई भागे या रहे। शहर की बहुत सी लड़कियॉ रोज भागती है, होंगी। मगर मैं किसी के घर नहीं जाता, क्यों? फिर आपके घर क्यों आया? अनु ने भले ही मुझे राखी नहीं बॉधी आपने मुझे पैदा नहीं किया लेकिन आप ये मत भूलिए कि कभी पराये रिश्ते अपने रिश्ते से भी अधिक काम में आते हैं। और लोग निभाते हैं। मैं उसका सगा भाई न सही, धर्म–भाई तो हूँ। इसीलिए अपनी धर्म बहन की रक्षा करना मेरा फर्ज है। उसके लिए मैं जान भी दे सकता हॅ। अनु के दिल में मैं क्या हूँ ये तो आप उसी से पूछ सकती हैं। अगर विश्वास न हो तो इंस्टीट्यूट के लड़कों,लड़कियों और मनोज सर से पूछ लीजिएगा। हॉ अगर आपको मेरी जान लेने से मेरी अनु बहन मिल जाती है, आपकी इज्जत बच जाती है तो मैं खड़ा हूँ। आप मेरी जान ले सकती हैं। मैं चूँ भी नहीं करूँगा। (वह सर झुकाकर खड़ा हो जाता है।)

अनु की मम्मी सोच में पड़ जाती हैं।

सावनः–क्यों खड़ी हैं आंटी, लाइए चाकू, रिवाल्वर और मार डालिए मुझकों, आपको संतुष्टि मिल जायेगी।

अनु की मम्मीः– नहीं बेटे, मैनें तुझे समझने

में बड़ी भूल की और देर कर दी । मेरा दिल कह रहा है कि तू ऐसा लड़का नहीं हैं। बेटे, मुझे माफ कर दो। मैनें तुझे इतना उल्टा–सीधा बोला।

सावनः– नहीं आंटी। माफी तो मुझे मांगनी चाहिए। आजकल का माहौल ही कुछ ऐसा है, जो प्रत्येक इंसान को ऐसा करने व सोचने पर मजबूर कर देता है।

अनु की मम्मीः– बेटा बैठ जाओं। तू खड़ा क्यों है? क्या अपने घर में ऐसे ही रहा जाता है। अपनी मम्मी से इतनी दूर रहकर बात किया जाता है। आओ बेटे मेरे पास बैठों।

(सावन आकर सोफे पर बैठ जाता है। वह उसके ललाट को चूम लेती है।)

अनु की मम्मीः– सावन बेटा, तू ही बता, मैं क्या करूँ। उसे कहां खोजू । वह ऐसी लड़की नहीं थी। मैनैं उसे पूरी छूट दे रक्खी थी। अगर उसे कोई लड़का पसंद था तो हम से कहती। अगर लड़का सही होता, उनमें सच्चा प्यार होता तो शादी करने में क्या हर्ज था। लेकिन सोचती हूँ मुहल्ले वाले और परिचितों को क्या जवाब दूँगी।

सावनः– आंटी सीधी सी बात हे। कह दीजिए कि उसका कम्प्यूटर कोर्स के लिए सेलेक्शन हो गया। इसीलिए वह जल्दी में चली गयी। समय बहुत ही कम था।

अनु की मम्मीः– बेटा, तू ठीक ही कहता है।

सावन अनु के पापा की सहायता से एक हफ्ते के लिए शिलांग जाकर अनु और अनिल से मिल आता है। उनके खर्चे के लिए कुछ पैसे भी दे आता है। उन दोनों को यहॉं की सारी गतिविधियों से भी अवगत कर देता है। सावन उन दोनों के सुखमय जीवन को देखकर बहुत ही प्रसन्न होता है। वह वहॉं से लौटते वक्त रास्ते में ही आगे की सारी योजना बना लेता है। वह ट्रेन से उतरकर सीधे अनु के घर जाता है।

सावनः– आंटी, अगर मैं प्रेम विवाह पर संगोष्ठी का आयोजन कराउगा और उसमें यह प्रचारित कर दिया कर दिया जाय कि उसकी अध्यक्षता आप लोग करेंगे, तो यह

खबर सुनकर अनु को पूर्ण विश्वास हो जाएगा और जरूर संपर्क करने का प्रयास करेगी। उसके अंदर से डर निकल जायेगा कि आप लोग उसे डॉटेंगे और इधर आप लोग अनु की शादी खोजने की चर्चा रिश्तेदारों और परिचितों में करवा दीजिएगा। जिससे अगर वह प्रेमविवाह भी कर ली होगीतो आपकी इज्जत पर तनिक भी ऑच नहीं आएगी। उक्त लड़के से ही उसकी शादी रस्मों–रिवाज से करवा दिया जाएगा। वे उनकी बातें सहर्ष स्वीकार कर लेती हैं। यही उनके हक में भी थी। मरता क्या न करता। उन्होंने अन्दर ही अन्दर सावन को अपना दामाद बनाने की बात सोची है। उन्हें बस अपनी बेटी के आने का इतंजार है। वे सोचती हैं, अनु सावन को भाई बनायी है, राखी तो नहीं बॉधी। वे अपनी इस विचारधारा से मि0 एास0 एन0 सिंह को भी अवगत करा चुकी होती हैं। उन दोंनो को यह संदेह है कि सावन ने ही अनु को कहीं हटाया है खुद के शादी के लिए और इधर उसी का मकड़ जाल बुन रहा लेकिन उन्हें सावन को दामाद बनाने में कोई आपत्ति नहीं है।

सावन कोर्ट के रजिस्टार मि0 अशोक शुक्ला, मि0 अजय अग्निहोत्री, और डॉ0 रेखा से मिलकर उन्हें प्रेम–विवाह की संगोष्ठी के बारे में जानकारी देता है। सभी लोग उसके विचरों से पूर्ण सहमत हैं। वे लोग उसे हर तरह से सहायता करने का आश्वासन भी देते हैं। सावन इस संगोष्ठी में डॉ0 एस0एन0 सिंह ,मि0डी0 एन0 सिंह, अशोक शुक्ला, अजय अग्निहोत्री जैसे लोगों के शरीक होने की बात का खुद बढ़–चढ़कर प्रचार करवाता है। सावन अपने नाम का जिक्र नहीं करता। अनिल के पापा–मम्मी को शरीक होने के लिए तैयार कर लेता है।

7 जुलाई की तारिख को निर्धारित करता है। यह विशाल के जन्मदिन था। सावन विशाल के प्रेम में हुए बलिदान के लिए इस तारिख को यादगार बनाना चाहता था। निर्धारित समयानुसार रविवार 7 जुलाई को सुबह 10 बजे प्रोग्राम प्रारम्भ होता है। सावन इस सभा में एस0 एन0 सिंह एवं मि0डी0 एन0 सिंह से यह कबूल करवाना चाहता है कि वे लोग प्रेम–विवाह के समर्थक हैं, और यही श्रद्धांजलि होगी विशाल के प्रति। सभा के संचालन की जानकारी। सभा के मुख्य अतिथि महोदय माननीय डी0एन0सिंह, अध्यक्ष और अध्यक्षा महोदया मि0 एण्ड मिसेज एस0एन0 सिंह, हमारे परम श्रद्धेय, इस सभा के आयोजन के रीढ़

रजिस्टार श्री अशोक शुक्ला जी, इस शहर के ही नहीं, बल्कि प्रदेश के प्रतिष्ठित वकील मि0 अजय अग्निहोत्री भाई साहब, प्रमुख समाजसेवी श्रीमति क्रिस्टिना पी0 वामन एवं उपस्थित मेरे प्यारे भइयों, बहनों एवं प्यारे युव साथियों। पिछले दिनों प्रेम संबंध ों को लेकर अनेक ऐसी घटना घटी, जो कहीं हत्या के कारण तो कहीं आत्महत्या, तो कहीं भाग जाने, भगा ले जाने और कहीं कुछ परिवारिक विरोध के कारण अखबारों की सुर्खियों में रहीं। किसी घटना में बिरादरी के नियम–परम्पराओं की अवज्ञा को अपराध ा माना गया, किसी में गैर जाति के लड़के या लड़की से शादी करने के इरादे को अपराध माना गया। तो किसी में दूसरे सम्प्रदाय के लड़के या लड़की से शादी करने के साहस को अपराध माना गया। अपराधों के लिए कहीं तो जाति, पंचायत ने ईट–पत्थर से मारा तो कहीं लड़के–लड़की का जीना दुश्वार कर दिया गया।

बीसवीं सदी के अंतिम चरण में जहॉं हमारा दावा सभ्यता के शिखर पर पहुँच जाने का बन रहा है, वहॉं इस तरह का क्रूर और अमानवीय घटनायें हमें सभ्य समाज को पुनः परिभाषित करने के लिए बाध्य करती हुई प्रतीत होती हैं। अगर इतने विकास ओर इतनी प्रगति के बावजूद व्यक्ति की आजादी उसके अपने बारे में स्वंतत्र निर्णय लेने के अधिकार को छीनने वाली घटनाओं तो बनती ही है कि वह आत्मावलोकन करें। वह तय करे कि गड़बड़ी आखिर कहॉं है? वे कौन से कारण हैं जो आदमी को आज भी उतना ही बर्बर और क्रूर बनाये हुए है जितना कि वह कभी आदिम युग में था। आज हम लोग जिन प्रश्नों पर चर्चा करेंगे उनमें मुख्य निम्न हैं–

(1) युवक–युवतियों के बीच यौन आकर्षण यानी प्रेम और फिर प्राकृतिक यौन सम्बन्ध ों के स्वाभाविक निर्वाह को नैतिक माना जाए या प्रकृति के विरूद्ध इनके अस्वाभाविक नकार को?

(2)प्रेम–सम्बन्ध स्थापित हो जाने की स्थिति में परिवारों द्वारा इस संबंध के विच्छेद के आग्रह को नैतिक माना जाए या फिर लड़के लड़की की एक दूसरे के प्रति निष्ठा के तहत हमेशा–हमेशा के लिए एक दूसरे का हो जाने की विवाह की मॉग को?

(3)एक लड़के–लड़की के बीच प्रेम–संबंध उजागर हो जाने के बाद परिवार द्वारा लड़के–लड़की की रजामंदी को स्वीकृति प्रदान करना नैतिकता है या फिर उनकी मर्जी के विरूद्ध, उन्हें एक दूसरे से अलग उनकी अन्यत शादी कराने की चेष्टा करना?

(4)दूसरे लड़के या लड़की के साथ जीवन निर्वाह करने को बाध्य करना नैतिक है या उन्हें स्वेच्छा से जीवन साथी का चुनाव करने का आधिकार देना?

(5)इस तरह जो सच है वह स्वाभाविक है और जो सनातन है उसके अनुसार समाज की नैतिक मान्यतांए होनी चाहिए या फिर समाज की कथित मान्यताओं के अनुसार सच, स्वंाभाविक और सनातन को विकृत कर दिया जाना चाहिए?

अब मैं सभी उपास्थित स्वजनों, युवा साथियों से उपरोक्त प्रश्नों पर विचार करने और प्रेम विवाह को बढ़ावा देने के संदर्भ में अपने विचार रखने को कहूॅंगा। इस कड़ी की शुरूआत में मि0 अशोक शुक्ला से करने को आग्रह करूॅंगा।

मि0 अशोक शुक्लाः–(सबको सम्बोधित करते हुए) प्रिय दोस्तों, हम तो बूढ़े हो चले हैं, ज्यादा कुछ नहीं कर सकते। हॉ अगर आज का प्रत्येक युवा समाज की एक–एक बुराई को जड़ से मिटाने का बीड़ा उठा ले तो समाज सुधर जाएगा। आप लोगों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि आपके ही एक युवा साथी सावन ने इतने बड़े कार्यक्रम का बीड़ा अकेले ही उठाया है। वह समाज से प्रेम–विवाह के माध्यम से दहेज रूपी दानव को निकाल फेंकना चाहता है। उसने यह मुद्दा कुछ दिनों पहले जब मेरे सामने रक्खा तो मुझे घोर आश्चर्य हुआ कि इतनी बड़ी सोच। और मैनें तुरन्त हामी भर दिया।

आज प्रत्येक लड़की का बाप, अपनी लड़की को पढ़ाता है, लिखाता है, उसे हर तरह से योग्य बनाने का प्रयास करता है। जब वह कुछ लायक बन जाती है, तो उसे दूसरे को सौंप देता है। फिर हम और आप इतनी बड़ी सम्पत्ति मिलने के बाद भी टी0वी0, फ्रिज, स्कूटर आदि की मांग क्यों करते हैं? हमें तो खुशी होनी चाहिए कि हमें मुफ्त में एक ट्रेन्ड सेक्रेटरी, हम–सफर मिल रही है। वह भी केवल सुरक्षा और संरक्षा के बदले में। चूँकि दहेज हमारे समाज के कण–कण मेंसमा गया है, इसलिए इसे मिटाने का सबसे बड़ा तरीका यहीं है कि हमलोग प्रेम विवाह को बढ़ावा दें। इससे कई अन्य फायदे भी होंगे–

(1)हमें अपने अनुरूप लड़की का चयन करने का मौका मिल जाएगा।

(2)किसी बाप को बेटी के पैदा होने पर रोना नहीं पड़ेगाा। बेटियों की पैदा होते ही हत्या करने के पाप से, गर्भावस्था में अल्ट्रा साउण्ड करने के खर्च से मुक्ति मिल जायेगी।

(3)पारिवारिक विघटन नहीं होंगे।

(4)यह कोई नयी प्रथा नहीं है बल्कि सदियों से चली आ रही है। हमें बस इसे गिनती में बढ़ाना है। भगवान श्रीकृष्ण, राम, मुहम्मद साहब, ईसा मसीह, दुष्यंत, हमारे देश की स्वर्गीया प्रध ानमंत्री श्रीमति इंदिरा गॉंधी, राजीव गॉंधी, संजय गॉधी इत्यादि मिलेंगे तो फिर क्यों न हम भी इस परम्परा को बढ़ायें। एक तो हमारी संस्कृति जीवित रहेगी और दूसरे समाज का कुष्ठ दूर होगा।

## देश के अमर सपूत तुझे शत्–शत् नमन

# देवरिया जिले के लिए अमर शहीद अजय तिवारी

गिरिराज दूबे,
ब्यूरो प्रमुख, गोरखपुर

आठ वर्ष पूर्व भारतीय सेना के 610वीं बटालियन के इलेक्ट्रिक मैकेनिक इंजीनियरिंग कोर से सरहद के हिफाजत की जिम्मेदारी शुरू करने वाले अजय कुमार तिवारी 22 जुलाई को मंगलवार को चंगती/टाण्डा शिविर में सेना वर्दीधारी आतंकियों की गोली से शहीद हो गये।

शहीद अजय कुमार तिवारी का जन्म फौजी सिपाही श्री कपिल देव तिवारी के घर मे 31 वर्ष पूर्व तीसरी औलाद के रूप में देवरिया जिले के गोरखपुर मार्ग पर गौरी बाजार के पास विनायक में हुआ था। बचपन से ही होनहार श्री तिवारी सेना की नौकरी करने के प्रति दृढ़सकल्प थे। 1992 में इंटर की परीक्षा पास करने के बाद वे सेना की भर्ती के लिए प्रयास रत हो गये। उन्होंने 1995 में सेना में भर्ती ली। उनकी शादी 1988 में ग्राम.पोस्ट– चकरवा, मदनपुर, जिला देवरिया में धर्मावती देवी से सम्पन्न हुई। उनके प्रीती, नेहा, अभिषेक व विकास नाम के दो पुत्र और दो पुत्रियां है। उनके पिताजी सेना से रिटायर होने के बाद लोको गोरखपुर में कार्यरत हो गये। उनके एक भाई घर पर रहते हैं तथा उनके दूसरे रमेश तिवारी सुगर मिल गौरी बाजार में कार्यरत है। उनके दो साले है। बड़े साले ज्योतिष तिवारी बिमारी के कारण स्वर्गवासी हो चुके हैं तथा छोटे साले श्री अवध नारायण तिवारी इलाहाबाद में जिले के नैनी क्षेत्र में एक होम्योपैथिक डाक्टर है। वे इलाहाबाद के सुप्रतिष्ठित होम्योपैथ डाक्टर अकोला के साथ भी सहायक के रूप में पिछले 18 वर्षो से कार्यरत है।

अजय तिवारी का झंडे में लिपटा पार्थिव शरीर 25 जुलाई को प्रातः10 बजे सैनिक वाहन संख्या कें.के.2एन. 4137 से खरोह चौराहा पर पहुँचते ही पहले से ही प्रतीक्षारत आम जन सैनिक वाहन के पीछे हो लिए। वहाँ उपस्थित जनसमुदाय के जुबान पर कहने को कुछ नहीं था। सब कुछ उनके चेहरे से झलक रहा था। काफिले को घर के सामने पहुँचने पर पारिवारिक माहौल के करूण रोदन को देखें नहीं बनता था। हर तरफ रूदन/विलाप/दहाड़। शहीद की पत्नी धर्मावती देवी, माँ लालमती, चाची लीलावती, बहने नीतू, इन्दू छोटा भाई रमेश समेत सैकड़ो लोग दहाड़े मार–मार बेजान हुए जा रहे थे। शहीद के साले अवध नारायण तिवारी, चचेरे साले सनातन तिवारी का परिवार भी इन दहाड़ो में समाहित था। इनको देखकर शहीद के पुत्र व पुत्रिया काफी गंभीर थे। शहीद का छोटा लड़का विकास ताबूत को एक हाथ से पकड़े खड़ा सभी को टुकुर–टुकुर ताक रहा था।

शहीद जावाज की अंतिम बार झलक पाने के लिए होड़ सी लग गयी थी। सपा विधायक अनुग्रह नारायण सिंह स्वयं भीड़ को नियंत्रित करने में जुटे हुए थे। मझना नाला पर राजकीय सम्मान के साथ सायंकाल अजय की अन्तेयेष्टि कर दी गयी।

## लेखक/लेखिकाओं के लिए

1.काग़ज के सिर्फ एक ओर पर्याप्त हाशिया छोड़कर सुपाठय अक्षरों में लिखी अथवा टाइप की हुई रंचनाएँ भेजें।

2.रचना के साथ पर्यापत टिकट लगा, लेखक का पता लिखा लिफाफा आना चाहिए। इसके अभाव में हम रचना से संबंधित किसी भी बात का उत्तर नहीं देंगे।

3. रचना के प्रथम पृष्ठ पर लेखक का पूरा नाम और अन्त में लेखका का पूरा अंकित होना चाहिए।

4. कोई भी रचना लगभग पन्द्रह सौ शब्दों से अधिक की न भेंजे।हम लेखकों फिलहॉल कोई पारिश्रमिक नहीं देते हैं।

# गुप्त रोग ताकत जवानी

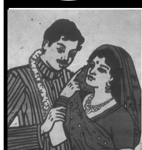

## गुप्त रोगों के शर्तिया ईलाज हेतु आज ही मिलें

### सेक्स या शुक्राणु समस्या ग्रसित रोगियों का निदान सम्भव

नोटः ध्यान रहे, सही समय पर सही प्रयास और उचित इलाज ही रोगी को ठीक कर सकता है, गारण्टी नहीं। बल्कि सफल इलाज करवाकर रोग को जड़ से समाप्त करें।

**मिलने का समयः**

प्रातः 9 बजे से रात्रि 8बजे तक, रविवार को प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक।

## नोट : उत्तर भारत में हमारी कोई शाखा नहीं है।

हमारे यहॉ आधुनिक तरीके से तैयार युनानी + आयुर्वेदिक पद्धति द्वारा सरल एवं सफल इलाज करवा के हर मौसम में बगैर किसी नुकसान के लाखाों निराश रोगी नया जीवन पा चुके हैं। हमारे इलाज के तरीके का लोहा सर्वश्रेष्ठ गुप्त रोग विशेषज्ञ भी मानते है।

आखिर गुप्त रोग है क्या? जिसे घर वालों से गुप्त, पास–पड़ोस से गुप्त मित्रों से गुप्त, यहॉ तक कि पत्नी से भी गुप्त रखा जाये, क्या गुप्त रोग कोई समस्या है? क्या गुप्त रोग छुआछूत है? या फिर गुप्त रोग भूत–प्रेत है? अगर आप में से आपके जानने वालों में से परेशान है तो कृपया कोई भी ऐसा सुझाव न दें, जिससे रोगी घबराहट या परेशान होकर आजकल के लुभावनें प्रचारों जैसे गारण्टी और चन्द दिनों के अन्दर ठीक करने का दावा करने जैसे प्रचारों पर ध्यान देने लग जाये और बाद में अपना पूरा जीवन अंधेरे में बिताने पर मजबूर हो जायें। ऐसे रोगियों के लिए **"न्यू हेल्थ क्लीनिक"** के प्रसिद्ध विशेषज्ञ डॉक्टर का मशवरा है कि यदि आप नपुंसकता, शीघ्र पतन, स्वप्नदोष, धातु रोग, पेशाब में जलन सुस्ती, कमद दर्द, पेट रोग, गर्मी सुजाक जैसे आदि रोगों का शिकार हो चुके हों और जगह–जगह इलाज के बाद भी सफलता न मिली हो तो आज ही **"न्यू हेल्थ क्लीनिक"** में आकर **डॉक्टर एम.आर.शाही** गवर्नमेंन्ट रजिस्टर्ड सेक्स स्पेशलिस्ट से मिलकर सरल एवं सफल इलाज करवाकर वैवाहिक जीवन का भरपूर लाभ उठायें।

# न्यू हेल्थ क्लीनिक

सेन्ट्रल होटल बिल्डिंग (डा0 झा के ठीक सामने), घंटाघर चौराहा, इलाहाबाद

कहानी

# अपना—अपना दर्द

डा0 रमा शंकर शुक्ल "रसराज"

मैंने उसका प्रथम दर्शन अपने किशोर जीवन के अंतिम चरण में किया था। वह मेरी उम्र से कुछ छोटी थी, लेकिन किशोरावस्था के अवसान और युवावस्था की शुरूआत ने उनकी देह में कमनीय, कोमल और मोहक आकर्षण पैदा कर दिया था। उसके यौवन की मादकता हर मधुलोभी भ्रमररूपी युवा का मन बरबस मोड़ लेने में कामयाब थी। विचार शून्य मस्तिष्क में भी ज्वार भाटे की तरह प्रेमरस का सरस प्रवाह बहने लगा था।

मेरे अध्ययन कक्ष से जुड़ी खिड़की से जब सूरज की मद्धिम रोशनी मुझ तक पहुंचती तो मैं प्रायः परदे को एक ओर करके बाहर देखता जिसे मन—बहलाव और नैसर्गिक वातावरण से आंखों को तृप्ति मिलती। वह प्रायः अपने दरवाजे पर खड़ी बेसुध सी कुछ सोचा करती थी। ऐसा लगता था जैसे वह भी उसी रोशनी को अपने घर में पाने के लिए बेचैन रहती। घर की बनावट और उसके अध्ययनकक्ष की अवस्थिति सदैव उसे ताजी रोशनी और हवा के लिए तरसा देती थी। परन्तु पढ़ने की दृढ़ इच्छा उसकी मानों एक जीवन्त आदत सी थी। इतना जरूर था कि वह दिन में दो एक बार मकान के शिल्पकार को मन ही मन बद्दुआएं अवश्य दिया करती थी। इन बद्दुआए में भी लिपटा उसका शब्द माधुर्य हर सदृदय के अन्तर्मन में एक सहज सी सिहरन पैदा कर देता था। यही कारण मुझे भी उसकी तरफ खिंच जाने के लिए प्रेरित करता था।

इस शहर में आए हुए उसे करीब दो साल हो गये थे, लेकिन उसके मम्मी—पापा की व्यस्तता और दौड़—धूप तथा दिन भर दरवाजे पर लटकते ताले के कारण पड़ोसियों से सम्पर्क शायद नहीं के बराबर था। प्रायः शाम को उसके घर का वातावरण चुलबुला और रंगीन हो जाता था जब उसके मम्मी—पापा के जाने पहचाने आगुन्तुक लोग इकट्ठे होकर एक दूसरे की बातों में हास—परिहास करने में मशगूल होते। तभी वह अचानक खीझती हुई दरवाजे के पास मम्मी को खींचकर

कहती—"मम्मी दिन भर मैं कॉलिज में रहती हूं, शाम को पढ़ने का वक्त होता है तो घर में रंग मंच सज जाता है। तुम लोग हमसे 'टाप' करने की उम्मीद भी करते हो। यह सब कैसे सम्भव होगा। बगल में सामने वाली खिड़की के पास बैठे लड़के की तन्मयता तो देखो। उसके मॉ—बाप की दी हुई शान्ति एवं पवित्रता का वातावरण उसे अपने लक्ष्य तक पहुंचाने में कभी विफल न होगी। उसकी बातें सुनकर मुझे ऐसा लगता मानों उसके अन्तर्मन का रूदन ही हंसी का अभिनय करता हुआ उसके चेहरे पर लावण्य विखेरा करता है।

मम्मी "महिला उत्थान समित" की अध यक्षता थीं। जनभावनाओं के अनुरूप उसे हरेक व्यक्ति की समस्याओं से अवगत होने का दायित्व प्राप्त था। जनसमस्याओं को लेकर कभी प्रदर्शन तो कभी कचहरी पर ध रना देकर शासन का ध्यान जनता की ओर मोड़ना उसकी पापा को भी 'क्लर्क' जैसी रूतबाविहीन नौकरी के पद पर होते हुए भी प्रान्तीय कुलाधिपति जैसा सम्मान देते थें। छोटे—बड़े सभी मंचों पर उसकी मम्मी की पीठासीन होना संयोजक के लिए गौरव की बात होती इसलिए महापुरूषों के वचनामृत का घूंट पिलाकर 'मम्मी' उसे चुप करा देती थीं।

उसके मम्मी की बातें सुनकर मेरे भी मन में भ्रान्ति—सी जगाने लगती। 'कैसे—कैसे मां बाप हैं जो बच्चों की समस्याओं का निदानकरने के बजाय सुभाषितों का घूंट पिलाया करते हैं। फिर दूसरे क्षण थोड़ा परिवर्तन होता! मानव सामाजिक प्राणी हैं, अन्तर्सम्बन्ध नहीं जोड़ेगा तो समाज की गति शीलता का क्या होगा? आदि मानव की पाशविक मनोवृत्तियां पुनः सजीव हो जायेंगी। हमारे पुष्पित—पल्लवित सामाजिक संस्कार बहारों के होते हुए भी मरू मनस्थली में झुलस जायेंगे।

मेरी वार्षिक परीक्षा के पोर चल रहे थे। थोड़ा सा इधर—उधर टहल घूमकर मन बहलाने के बाद मैं पढ़ने बैठ गया। गर्मी के दिन थे। शाम का वक्त हो चला था। वातावरण हल्का सा शीतल प्रतीत हुआ।

एक सौभाग्यमयी ग्रीष्मकालीन वायु का झोका मन को गुदगुदा रही है। उसकी कोमल हथेली में लगे मूल्यवान आंसू उसके निजी जीवन के कुछ सपनों की तरह प्रतीत होते थे। उनकी विचार तन्द्रा मानों बोल उठी थी 'क्या बगल वाले घर में मेहमान नहीं आये? क्या उस घर में बातें नहीं होतीं? उस घर में नीख शान्ति क्यों रहती हैं? उसके स्वप्नों को एक सुन्दर सा बिन्दु मानों अपने भाव प्रकट रहा हो। मानव जब तक यर्थार्थ को दूनिया में नही पहुंचता तब तक उसे वाह्याडम्बर ही आनन्द कानन दिखाई देता है। आंसू बहाने वालों की वेदना संसार तत्काल जान लेता है पर आंसू पीकर होठों पर हंसी रूप बनाये रखने वालोंका दर्द समझने वाला आखिर कौन है?

मेरा कष्ट शायद उसे इसी तरह मालूम नहीं था। मेरे बाबूजी बैंक में 'क्लर्क' थे। सर्वथा घुमक्कड़ मिलनसार और शीघ्र मित्रता–पटु। भांग पियक्कड़ी में अति निपुण। अक्सर आफिस के बाद या तो किसी के यहां भांग पीने स्वयं चले जाते या फिर मित्रमण्डली का सिल बट्‌टा सुसम्बोधनों के साथ घर में ही चटका करता था। इसकी कटुध्वनि प्रतिध्वनित होकर मेरे अध्ययन कक्ष तक पहुंचता करती थी। जिसका आभास शायद उसे न था। पिता जी उग्र एवं क्रोधी मिजाज के थे इसलिए शिकायता का स्वर जिह्जा पर आते–आते रूक जाता था। मां से कुछ कहता तो निराशा के शब्दों का भाव लेकर वापस लौटना पड़ता। आखिर सहने की एक हद होती है। कोई कहां तक कुढ़ता रहे। उदासीन मन तनहाई के क्षण गिनने लगता।

शरद ऋतु की चांदनी रात अपने शाये में चांद के साथ अठखेलियां कर रही थीं। आकाश निरभ्र था।

कोहरे की झीनी परतें सुखद मौसम के साथ अभिसारकरनी सी प्रतीत होती थी। मानो कोई अभिसारिका नायिका एकाकी क्षणों में अपने प्रिय के साथ रूठने मनाने की कला सीख रही हो। मैं आंगन में बैठा आगत भविष्य की सोच रहा था। एम0एम0 का पेपर शेष था। फिर भविष्य की पथरीली डगर पर झंझावतों के साथ नई जिदंगी की शुरूआत करनी थी जिसमें वैवाहिक जीवन से लेकर 'कैरियर' का बोझ भी शामिल था। मन शान्त भी था और अधीर भी, क्योंकि जहां एक तरफ पढ़ाई से मुक्ति होनी थी वहीं दूसरी तरफ नौकरी की तलाश।

वक्त के दरिया का सैलाब दिनो दिन बढ़ता जा रहा था। पिताजी मेरे प्रति निश्चिन्त थे तो मां मे मन में मेरी जिन्दगी में परिवर्तन सम्बन्धी चिन्ता थी। मां कहती बेटे कोई अच्छी सी नौकरी कर लो, घर बस जाय। हमारी जिदंगी के कुछ ही दिन तो शेष हैं। कभी–कभी ये बातें सुनकर चिढ़ सी होती। लगता, इस जगत में सर्वथा स्वार्थ दिखता है। पूरा वातावरण महुवे के ठर्रे का अदुधा लगता। पीने पर बेसुध जीवन दिखता और छोड़ने पर पीड़ा का अवसाद सहना पड़ता। बेवस आंखों में छिपा करूण क्रन्दन का कोई मूल्य किसी को पता ही नहीं था। मैं शिथिल पराजित सा दिखने लगा।

परीक्षा सम्पन्न हुए काफी दिन बीत चुके थे। मैं जीवन शिक्षा गढ़ने की कल्पना में खोया सा विश्वविद्यालय की चहारदीवारी में एक दिन प्रवेश करने लगा। अचानक जैसे मेरे सपनों का अरमान मूर्तिमान हो उठा हो। आंखों में एक नई चमक सी जग उठी। अपरिचत भाव में हम दोनों आमने–सामने खड़े थे। लजरों का मेल तो पुराना दिखता था पर वाणी और भौतिक जीवन का सम्मिलन शायद पहली बार हुआ था।

क्या मैं आपका नाम पूँछ सकती हूँ?

बस एक छोटा सा अनाम गुनाम राकेश!

पर, आपका....बस–बस रहने दें। मैं खुद ही अपना परिचय देना चाहिती हूं... मेरा नाम विभा ....मिश्रा!

तो क्या यह तमाच्छादित राकेश, विभावरी के साथ कब तक का कण्टाकीण पथ गुजार सकता है? उत्कठ्नि मन से बोल पड़ा।

उसका गला भर आया। रूँधे स्वर में जैसे भीषण समुद्री ज्वार भाटे के ऊफान को एकाएक उगलकर रख देना चाहती थी पर संयत हो उठी ।आवेग का विप्लव बोल उठा। दोनो चिरसहचर हैं किन्तु नदी के पाटों की भांति अभी भी विलग हैं। सुयोग मिला तो परिकल्पित चित्र में सुखभोग का विधान अवश्य बनेगा। वह गर्विता की भांति संयत हो उठी। मैने भी समय की नजाकत समझ ली। यह प्रथम समागम यादगार बन गया। शीशा–पत्थर–मोम, सबमें उसक चित्र दिखने लगा।

परीक्षा हुए काफी दिन बीत गये। सुबह का वक्त था। मैं दरवाजे पर बैठा मन मुं अपने अतीत का पृष्ठ खोल रहा था। इतने में अखबार वाले की आवाज सुनाई दी। द्वितीय पृष्ठ पर विश्वविद्यालय का परीक्षा फल निकला था। परीक्षाफल अकल्पित था। मैं अवाक् रह गया। जुबली कालेज से मैंने एवं क्वींस कालेज से उसने 'टाप' किया था। दोनो के छायाचित्र अखबार में आमने–सामने छपे थे। विपरीत परिस्थियों में भी ऐसा सुखद संयोग देखकर मेरी ईश्वर के प्रति आस्था जाग उठी। मेरे मन के तार झंकृत हो उठे। माता–पिता के प्रति श्रद्धा की भावना उमड़ पड़ी। वही सुखद सम्मिश्रण शायद उसे भी हुआ होगा।

प्रान्तीय सेवाओं की परीक्षाओं से परीक्षाफल धड़ाधड़ निकल रहे थे। परीक्षा में भी बैठा था। विभा ने भी उस परीक्षा को 'अटेण्ड' किया था। प्रान्तीय सेवा में भी दोनो अब्बल आये। मां–बाप के प्रति दुराग्रह की कसम मिट गयी। एक पर एक शादी के 'आफर' आने लगे। मैं इन्कार करता गया। उन्हीं विचारों से भावुक विभा ने भी शादी की नीयत मुझझे बांध ली थी। परन्तु समस्या

एक थी– वह विजातीय सवर्ण ब्राह्मण कुलीन और मैं कायस्थ कुलोद्भव था। कैसे निदान हो। मैने जब यह प्रस्ताव अपनी मां से बताया तों वह हां कर बैठी लेकिन जाति के नाम पर उसके भी मुख से प्रश्नावाचक निकल पड़ा। ऐसा लगा मानों धरती का सीना चीरकरकिाला गया खजाना पुनः उसी कोख में समा जायेगा। तीन महीने बाद हम दो एक ही ट्रेनिंग कालेज में पहुंचे। मुलाकातों का धारा प्रवाह सिलसिला बढ़ने लगा। मेरे माता–पिता की तरफ से कोई अवरोध नहीं था। परन्तें उसकी तरफ से मुझे कुछ हिचक सी लग रही थी। सकी मम्मी अति आधुनिक विचारों से ओतप्रोत सामाजिक संगठनों से जुड़ी उदारवादी महिला थीं, परन्तु पिताजी पुराने ख्यालों के छुआ–छूत पोषी ब्राह्मण थे। वे विजातीय विवाह के कतई पक्षधर नहीं थे। परन्तु मम्मी का ख्याल था कि वयस्क लड़की अपना मनपसन्दजीवनसाथी चुन सकती है। दोनो का अपना द्वन्द जारी था। दूसरी तरफ प्रेम की मुकुलित कलियां खिलने के लिए बेताब थी। प्रेम हारकर भी जीत जाता है। वही हुआ हम दोनो की जिंदगी में भी। अबला नारी का सम्बोधन ही विजय ध्वजा कर आरोहण बन गया। उसकी मम्मी की विजय हुई। हम दोनो के अइलसाये उनंदे भविष्य का प्रभात हो गया। परिणय सूत्र की कच्ची गांठे जीवन पर्यान्त के लिए एक दूसरे से बंध गयी। मन–मुफुलित हुआ, जीवन स्पन्दित हुआ, विभावरी का सुखद प्रभात शीतल वायु के झोंके की तरफ राकेश को आहलादित करने लगा।

## आवश्यक सूचना

दोस्तों इस बार से हम एक पेज केवल नवोदित कवियों के लिए प्रारम्भ कर रहे है। इस पेज में नवोदित कवियों की रचनाएं ही प्रकाशित की जाएगी। इसमें कविता, गीत गज़ल में से कोई भी एक हो सकता है।

## चाकलेट केक

**सामग्रीः** घी डेढ़ कप, नमक एक चुटकी, चीनी पाउडर डेढ़ या दो कप, अण्डा 5, मैदा 3 कप, दूध एक कप, बेंकिग पाउडर डेढ़ चम्मच, बनीला एसेंस 4 बूंद, चाकलेट पाउडर 3 चम्मच

**विधिः** घी और चीनी को 15 मिनट तक फेंटे। अब इसमें अण्डा डालकर आधा घण्टा फेंटे। मैदा तथा बेंकिग पाउडर मिलाकर छान लें और मिश्रण में मिलाकार अच्छी तरह घोल तैयार कर लें। इसमें दूध और एसेंस डालिए। इसके बाद बर्तन में कागज रखकर उसमें घी लगा लें, पेस्ट फैला दें। चॉकलेट के लिए आधे में चाकलेट पाउडर मिलाकर उसके ऊपर फैला दीजिए। ऊपर से सूखा मेवा डालकर पहले से गर्म ओवन में बेक करें। केक के फूलने पर ओवन बन्द कर दें। और दुबारा 10 मिनट तक बेक करें। केक का किनारा हटने पर निकाल कर ठंडा करें। अब पलट कर बेंकिग ट्रे से निकालकर ठंडा करें।

## काकोनट बिस्किट

**सामग्रीः** मैदा 1 कप, चीनी पाउडर 1 कप, घी आधा कप, बेकिंग पाउडर 1 छोटा चम्मच, नारियल पाउडर डेढ़ कप, ऐसेंस की बूंद

**विधिः** घी और चीनी को मिलाकर 20 मिनट फेंटे। मैदा के साथ बेंकिग पाउडर को छान लें और मिश्रण में मिलाकर अच्छी तरह गूंधे। नरम होने तक गूंधते रहे। फिर नारियल पाउडर और एसेंस डालकर गूंधे। नरम करने के लिए इसमें थोड़ा दूध डालें। फिर आधा घण्टा तक अच्छी तरह गूंधे। फिर इसकी छोटी लोई बनाकर हल्का सा सॉचें में तेल लगाकर काटे और ओवन में 20–25 मिनट तक बेक करें।

## जीरा नमकीन बिस्किट

**सामग्रीः** घी आधा कप, मैदा 2 कप, चीनी

✍श्रीमती जया गोकुल
संचालिका, स्नेहांगन कला केन्द्र

2 चम्मच, बेकिग पाउडर एक चौथाई चम्मच, नमक आधा चम्मच, जीरा 1 चम्मच, काली मिर्च आधा चम्मच पीसी, काला नमक आधा चम्मच, नीबू आधा

**विधिः** घी तथा चीनी को आपस में मिलाकर 15 मिनट तक फेंटिए। नमक, मैदा व बेंकिग पाउडर भी मिलाइए। अब इसमें जीरा डाल दीजिए। अब एक अलग बर्तन में एक चम्मच घी, एक चौथाई चम्मच बेंकिग पाउडर तथा आधा चम्मच पिसी काली मिर्च, 1 चम्मच नीबू का रस मिलाकर अच्छी तरह से फेंट लें और इसी में आधा चम्मच काला नमक भी डाल दें। इस पेस्ट को अलग रख दे। मैदा वाले मिश्रण को अच्छी तरह गूंधे। उसे एक चौथाई इंच मोटाई तक बेल लें तथा ऊपर से कॉटे को दाग लगा लें। फिर चिकने बर्तन में एक चौथाई इंच की दूरी पर पहले से गर्म ओवन पर पकाएं। समय 15 से 20 मिनट तक।

विशेषः 10 मिनट के बाद बिस्किट को पलट दें। फिर 5 से 10 मिनट के लिए बें क करें।

अगर आप किचने संबंधी कोई प्रश्न पूछना चाहती है या किसी विशेष व्यंजन के बारे में जानना चाहती है तो हमें लिखें–

स्नेह किचेन द्वारा सम्पादक 'विश्व स्नेह समाज'
एल.आई.जी–93,नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

# आत्मीय संबंध बढाने की कला

0 श्रीमती संगीता दूबे

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अतः समाज से जुड़ रहने के लिए उसे संबंध और मेलजोल की आवश्यकता होती है, यह आपसी मधुर संबंध उसके जीवन को सफल बना सकते हैं और उसमें आत्मविश्वास जगा सकते हैं, कोई भी व्यक्ति अकेला रह कर खुश नहीं रह सकता, मिलजुल कर रहना, दूसरे के भावों को समझना व पारस्परिक सौहार्दपूर्ण संबंधों को बढ़ाना एक कला है, इसे विकसित करने के लिए हमें बहुत सी बातों को स्वीकार करना, छोड़ना और अपनी आदतों में परिवेश व परिस्थितियों के अनुकूल बदलाव लाने की आवश्यकता पड़ती है, यही सब बातें दांम्पत्य जीवन को खुशहाल बनाने के लिए भी अत्यंत आवश्यक है और जब इन बातों को बखूबी निभा पाते हैं, तो हम गलत आदतों और व्यवहार से होने वाले तनाव से बच पाते हैं, अलिकस क्रिस्टा ने अपनी पुस्तक स्ट्रेस सरवाइवल में इस कला को खूबसूरती से प्रस्तुत किया है जिसे स्ट्रेस की इस श्रृंखला में हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं,

हर व्यक्ति को अपने जीवन में प्यार और मधुर संबंधों की आवश्यकता होती है, यह एक मुख्य आधार है, जिस पर हम जीवनयापन करते हैं। हम अपने आपमें कितना आत्मविश्वास जगा पाते हैं, अपने भावों को किस सीमा तक ठीक ढंग से प्रस्तुत कर पाते हें,कितना खुश रह पाते हैं और मानसिक रूप से अपने आपका कितना संतुलित रख पाते हैं. ये सब बातें इन मधुर संबंधों पर निर्भर करती हैं. हम अपने आसपास के लोगों, परिवारजनों एवं स्वजनों के साथ कितने मधुर संबंध बना पाते हैं, उसी के अनुपात में हम यह सब खुशियां हांसिल कर सकते हें कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं है, जो अकेला रह कर लंबे अरसे तक खुश रह सके. हां, यदि वह अपनी मूलभूत आवश्यकताओं और इच्छाओं को दबा दे तो अवश्य वह अकेला, रह सकता हे. मगर कितना खुश रह सकता है, यह कहना काफी मुश्किल है.

अपने जीवनकाल में हम कितने अच्छे एवं मधुर संबंध दूसरों से बना पाते हैं और उन्हें कितने अरसे तक निभा पाते हैं, यह अपने आप में एक चुनौती है. पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे, जिसमें एक ही छत के नीचे एक मां–बाप के सभी बच्चे परिवार के साथ रहते थे, वे मिलजुल कर एक दूसरे के कार्य में हाथ बटांते थे और एक दूसरे को सहारा देते थे. मगर आधुनिक युग में अब बड़े एवं सम्मिलित परिवार नहीं होते हैं. सब लोग अलग–अलग रहते हैं. इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं के लिए सभी साधन खुद ही जुआने पड़ते हैं. इसके अलावा जो दूसरे असामान्य युगल होते हें. जैसे दो मर्द साथ में रहें यादो औरतें साथ में रहें या फिर मां–बाप में एक ही रहेदूसरा गुजर जाये या आपस में तलाक ले लें तो ऐसे लोगों के परिवार काफी ताव में रहते हैं और उन्हें अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए खुद ही सारे इंतजाम करने पड़ते हैं.

आज के युग में नारियों का सामाजिक रूप और महत्व बदलता जा रहा है, उसके कारण आधुनिक रिश्ते ही बदल गये हैं,उनमें काफी फेरबदल होने लगे हैं आजकल महिलाएं बाहर काम करने जाती हें अतः घर और बाहर, दोनों जगह की जिम्मेदारियां संभालने में उन्हें काफी तनाव महसूस होने लगा है. बहुत कम ऐसे पति होते हैं जो घर के कामकाज में हाथ बंटाते हैं. जब कामकाजी अपने पारिवारिक संबंधों को मधुर बनाने के लिए हमें चाहिए कि हम बदलते हुए वातावरण को समझें और पुराने ढर्रो को छोड़ कर आधुनिक बदलाव के साथ–साथ अपनी भावनाओं को काबू में रखें अपने कार्यो पर नियंत्रण रखें तभी जा कर हम अपलने दांपत्य जीवन को सुखी कर पायेंगे पहले की अपेक्षा अब हम स्वयं से, जीवन साथी से और अपने स्वजनों से काफी अपेक्षाएं रखते हैं और इसलिए उनमें तनाव पैदा होने की संभावनाएं भी बढ़ जाती हैं.

महिलाएं अपने काम पर जाती हें तो वे आत्मग्लानि भी महसूस करती हैं कि उन्हें अपने बच्चों को और अपने घर को छोड़ कर काम पर जाना पड़ता है. वे स्वेच्छा से काम करना चाहती हैं, बल्कि घरकी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए अधिकांश महिलाएं काम करती हैं ऐसे में उनके परिवारिक संबंध काफी तनावमय होजाते हैं पुरूषों में भी कभी–कभी एक हीनभावना घर कर जाती है. उनके पुरूषत्व को उस वक्त ठेस पहुंचती है, जब वे महसूस करते हैं कि घर में अब केवल वे ही कमाने वाले नहीं हैं, उनकी पत्नी भी अब बराबर कमाती है और ऐसे में वे तनाव से घिर जाते हैं.

अपने पारिवारिक संबंधों को मधुर बनाने के लिए हमें चाहिए कि हम बदलते हुए वातावरण को समझें और पुराने ढर्रो को छोड़ कर आधुनिक बदलाव के साथ–साथ अपनी भावनाओं को काबू में रखें तभी जा कर हम अपने दांपत्य जीवन को सुखी कर पायेंगे. पहले की अपेक्षा अब हम सवयं से, जीवन साथी से और अपने स्वजनों से काफी अपेक्षाएं रखते हैं और इसलिए उनमें तनाव पैदा होने की संभावनाएं भी बढ़ जाती हैं पति–पत्नी के आदर्श रिश्ते में हम मधुर यौन संबंध चाहते हैं, भावात्मक और कलात्मक एकता पसंद करते हैं, हम यह भी चाहते हैं कि हमारे विचार सदृश्य हों, हमारी दिलचस्पियों एक ही दिशा में हों और महत्वाकांक्षाएं एवं दृष्टिकोण भी आपस में मिलते हों इसलिए हम इस आदर्श रिश्ते को बनाये रखने की चेष्टा करते हैं, ताकि जिंदगी मधुर बन सके और जीवन में एक तालमेल सथापित हो सके. आज कल दोस्ती के संबंध ज्यादा होते हैं और जब दो शिक्षित प्राणी एक साथ जीवनयापन करते हैं तो उनमें यौन और प्यार के अलावा मानसिक समझौता भी होता है, जो भौतिक होता है. जब हम इस तरह का आदर्श संबेध नहीं स्थापित कर पाते हैं तो हम एक दूसरे के लिए असहनीय

# पति–पत्नी के आपसी संबंध

बनते जाते हैं. एक दूसरे की छोटी–छोटी बातों पर झल्ला उठते हैं और इस तरह से वैवाहिक संबंध खराब होने लगते हैं. उनमें तनाव आने लगता है. एक दूसरे के अत्यधिक उम्मीदें रखने से ओर मांग करने से जीवन में खलल पड़ने लगता हे और व्यावहारिक. संबंध पारिवारिक कलह में बदल जाते हैं. यह कभी संभव नहीं हो सकता कि आप साथी से अनावश्यक और यथार्थ से दूर मांग करते रहें, उम्मीदें रखते रहें और यह आशा करें कि वह आपकी हर मांग पूरी करेगा आपका जीवनसाथी कितना ही मधुर संबंध रखने का प्रयत्न क्यों न करें, वह कितना ही समझौता करने की चेष्टा क्यों न करें, यदि आप उसे समझेंगे नहीं और परिस्थितियों को देखते हुए समझौता नहीं करेंगे तो जिंदगी में खुशहाली कभी नहीं आ सकती ऐसे में तनाव निरंतर बढ़ता जाता है, जब हम अपने जीवन साथी की सभी मांगों और इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं तो अपने भीतर एक अभाव का अहसास करते हैं और अपने आपको दोषी समझने लगते हैं कि हम अपने जीवनसाथी की आकांक्षाओं के अनुरूप अपने आपको नहीं ढाल सके, ऐसा होने से आत्मग्लानि पैदा होती है और तनाव बढ़ता है.

यह सौभाग्य की बात है कि आज के युग में अपने संबंधों को मधुर बनाने के हमें अनेक मौके मिलते हैं. हम अपने वैवाहिक संबंध ों में खुले दिल से एक दूसरो का विचार कर पाते हैं, पूरी ईमानदारी के साथ यदि हम चेष्टा करें तो कोई कारण नहीं कि हमारे वैवाहिक संबंध मधुर बन नहीं सके. ऐसा होने से कहीं आप अपनी इच्छ्ज्ञओं को नियंत्रण में रखें तो कुछ हद तक आपका जीवनसाथी भी आपकी इच्छाओं क पूर्ति करने की चेष्टा करेगा. इस तरह आध ुनिक वातावरण को ध्यान में रखते हुए हमें अपने वैवाहिक संबंध मधुर बनाने चाहिए, अपने पारस्परिक संबंध, प्रेम और एक दूसरे की भावनाओं का आदर कर संबंध को आगे बढ़ाना चाहिए, हमें एक दूसरे की शक्ति का फायदा उठाना चाहिए और कमियों को ढकने की चेष्टा करनी चाहिए.

प्रारंभ में दांपत्य जीवन खुशहाल होता है और जो रिश्ते स्थाई रूप से बनते हैं वे हमेशा प्रारंभिक अवस्था में बड़े मधुर होते हैं. मगर यह खुशहाली और मधुर संबंध जयादा लंबे अरसे तक बहुत कम दंपतियों में चल पाते हैं, परिस्थितियां और वातावरण बदलते हैं, यदि हम दनके अनुरूप अने आपको नहीं ढाल पाते है तो संबंध भी बिगड़ने लगते हैं. अपने आपको बदलने की क्षमता रखने वाले दंपति अपने दाम्पत्य जीवन को मधुर बनाये रख लोग आदर्श दंपति की बात करते हैं मगर सच पूछा जाये तो आदर्श दंपति की व्याख्या करना अत्यंत कठिन कार्य है. हर दंपति का अपना–अपना व्यक्तिगत दायरा होता है, उनमें से हर एक की कुछ ताकत होती है. दोनों को मिला कर एक सफल दांपत्य जीवन तभी बन पाता है, जब वे एक दूसरे को समझ कर और अपनी आदतों को नियंत्रण में रख कर अपनी महत्वाकांक्षा और इच्छाओं को एक दूसरे के अनुरूप ढाल लेते हैं सकते हैं. जब तक वातावरण और परिस्थितियां हमें खरी कसौटी पर न उतार लें तब तक हम अपने जीवनसाथी के बारे में हर प्रकार की जानकारी नहीं रख पाते और न ही यह उम्मीद कर सकते हैं कि वह हम उसके बारे में सब कुछ जान जायेंगा वक्त की कसौटी पर खरे उतरने के बाद ही हम एक दूसरे को ठीक से पहचान पाते हैं, तब यदि हम समन्वय स्थापित कर पाते हैं तो जीवन खुशहाल बनता है.

लोग आदर्श दंपति की बात करते हैं मगर सच पूछा जाये तो आदर्श दंपति की व्यख्या करना अत्यंत कठिन कार्य है हर दंपति का अपना–अपना व्यक्तिगत दायरा होता है, उनमें से हर एक की कुछ कमजोरियां होती हैं, कुछ ताकत होती है. दोनों को मिला कर एक सफल दांपतय जीवन तभी पाता है, जब वे एक दूसरे को समझ कर और अपनी आदतों को नियंत्रण में रख कर अपनी महत्वाकांक्षा और इच्छाओं को एक दूसरे के अनुरूप ढाल लेते हैं. आप अपने मन में अपने जीवनसाथी की एक बहुत ही स्वप्निल छति बना लेते हें और यह उम्मीद करते हैं कि वह उस छवि के अनुरूप बन पायेगा. लेकिन यथार्थ से दूर होने पर ये संबंध टूटने लगते हैं और तनाव पैदा होता है. यदि आप यह समझते हैं कि शादी के प्रारंभिक दिनों में आप एक दूसरे के प्रति अत्यंत स्नेह प्रदर्शित करते थे, एक दूसरे को समझते थे, आप कभी दूसरे की आवश्यकताओं का ज्यादा ख्याल रखते थे और हर वक्त प्यार प्रदर्शित करते थे, वैसा ही आप हमेशा करते रहेंगे तो भ्रम है और ऐसा कदापि नहीं होता है.

मनुष्य स्वभाव से चंचल है और हमारी आदर्शवादिता भावनाओं से अलग होती हैं, वह कियान्वित बहुत कम हो पाती हैं. इसलिए यह उम्मीद कि हमें सौ प्रतिशत आदर्शवादी जीवनसाथी मिलेगा काल्पनिक है. यह भी कहना एक भ्रम है कि हम शत प्रतिशत आदर्श जीवनसाथी सिद्ध होंगे. दोनों ही तरफ इस तरह के दावे भ्रामक हैं. जैसे ही आप अपने जीवनसाथी को बिना शर्त प्यार करना सीख जाते हैं. उसकी कमियों को स्वीकार कर लेते हैं और उसकी अच्छाइयों की तरफ ध्यान देने लगते हैं तो आपकी समस्याएं उसी अनुपात में कम होने लगती हैं तथा जीवन में समन्वय और खुशहाली बढ़ने लगती है. समूची जिंदगी के लिए एक आदर्श रिश्ता और मधुर संबंध कायम करने और उसे निभाने के लिए बहुत आत्मविश्वास, आत्मज्ञान और प्रयत्नों की आवश्यकता होती है. जब हम यह जान जाते हैं कि हमें कितना देना और कितना लेना चाहिए, कब हमें अपनी भावनाओं पर नियंत्रण करना चाहिए और कब एक दूसरे की इच्छाओं के टकराव से बचना चाहिए. दूसरों की आवश्यकता क्या है? उनकी राय क्या है? कब अपने आपको प्रदर्शित करना चाहिए और कब आवश्यकता पड़ने पर गलतह के लिए अपना दोष मान लेना चाहिए जब यह सब बातें हम कर पाते हैं तभी जिंदगी में मधुर संबंध बने रहते हैं. जब हम एक दूसरे को टोकने, उनमें खामियां निकालने और बात–बात पर एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगाते हैं तो ऐसे में हमीरे रिश्ते कटु होने लगते हैं और तनाव पैदा होने लगता है.

✡जब पहली बार उसके रिश्ते के लिए सुधा के पिता जी आए थे। मैंने एक बार सुधा से बात करने की इजाजत मांगी थी और जब सुधा से मिला तो उससे इतना ही पूछा था कि मैं आपको पसंन्द हूँ।

✡ प्रायः घरों में लड़कियों से यह नहीं पूछा जाता कि रिश्ता या लड़का तुम्हें पसन्द है या नहीं। महज लड़कों कि पसन्द–नापसन्द का ही ख्याल किया जाता है। परन्तु मेरा विचार था कि जिससे विवाह करूंगा उससे उसकी इच्छा जानकर।

✡ मुझे पारिवारिक और आपसी कलह से दूर करने के लिए विवश होकर ऑफिस में गमन करना पड़ा।

✡ तभी अचानक सामने के कोठे पर एक बोझिल सी आंखों से देखती हुयी एक वेश्या दिखती है। जिसे देखकर दो पल मैं ठहर सा गया। उसके लव कुछ बोलने को होते है। वह दीपक–दीपक आवाज देती है।

✍रजनीश तिवारी

# अरमानों की दुल्हन

अपने लॉन में दीपक सूखी घासों की ढेर पर बैठा सिगरेट की कश ले रहा है और उसके धूंए में अपनी खोई जिन्दगी को तलाशता है। कई वर्ष पूर्व जब वह एक प्राईवेट फर्म में एक अच्छे से पद पर उसे कार्य मिला। बड़े अरमान सजाने लगा था। अपनी जिंदगी को भौतिक सुखों से भर लूंगा। जब उसका विवाह सुधा नाम की लड़की से होना तय हुआ। जब पहली बार उसके रिश्ते के लिए सुधा के पिता जी आए थे। मैंने एक बार सुधा से बात करने की इजाजत मांगी थी और जब सुधा से मिला तो उससे इतना ही पूछा था कि मैं आपको पसंन्द हूँ। पूरा जीवन साथ–2 बिताना है। दोनों कि सहमति अनिवार्य है। प्रायः घरों में लड़कियों से यह नहीं पूछा जाता कि रिश्ता या लड़का तुम्हें पसन्द है या नहीं। महज लड़कोंकि पसन्द–नापसन्द का ही ख्याल किया जाता है। परन्तु मेरा विचार था कि जिससे विवाह करूंगा उससे उसकी इच्छा जानकर। मैंने सुधा से स्पष्ट कहा था यदि आपको रिश्ता नहीं पसन्द हो तो आप मुझसे स्पष्ट कर दें। मैं स्वयं कोई बहाना करके मना कर दूंगा। आप पर कोई आंच नहीं आयेगी। उस पल मैंने अपने को इन्द्र से कम नहीं समझा था। जिस पल सुधा ने मुझे और मेरे रिश्ते को हां का स्वर दिया था। रिश्ता को कौन 'ना' कर सकता है। सौ प्रतिशत मुझे पसन्द हैं।'

ये शब्द थे सुधा के जो मुझे उस दिन पूरी रात गुदगुदाते रहें। बड़ी धूमधाम से मेरी और सुधा की शादी हुई। वह खुशी–2 मेरे घर पर आयी। मैंने सुधा की झोली में सारे सुखों को परोसने की प्रबल कोशिश की। जीवन सुखी से गुजर रहा था। मैंने सुधा कि हर इच्छा को पूरी किया। मेरी अच्छी तनख्वाह थी। अतः किसी बात कि कमी नहीं थी। मैं वैसे भी विचार रखता था कि लड़किया बेचारी उस लतर के समान होती है जिन्हें पहले माता–पिता जिधर चाहते हैं मोड़ते हैं फिर ससुराल में पति जिधर चाहता है, उधर उसे मोड़ देता है। उनकी मजबूरी होती है मुड़ना मन हो या ना हो। उससे किसी को मतलब नहीं। वह एक मजबूत साख बन ही नहीं पाती। महज एक कमजोर लता समान रहती है। इस विचार को मन में रखकर मैंने सुधा को पूरी आजादी दी और उसकी सभी इच्छाओं कि पूर्ती करता रहता। वह जैसा भी कहती, जो भी कहती उसे मैं पूरा करता था। उस पसर जान न्योछावर करता रहता। वह भी मुझ पर जान छिड़कती थी। मेरी आवाज पर हर पल हाजिर रहती थी। इस तरह प्यार वश वह बहुत जिद्दी बन गयी। मेरी हर इच्छा कि पूर्ति करने को वह मेरी पता नहीं कौन सी मजबूरी समझने लगी थी और एक दिन नया फ्लैट लेने कि जिद्द कर बैठी पर पैसे कि व्यवस्था नहीं होने पर मैं टालता रहा। पर उसने उसे कलह का रूप दे दिया। मुझे पारिवारिक और आपसी कलह से दूर करने के लिए विवश होकर ऑफिस में गमन करना पड़ा। वक्त के थपेड़ों ने मुझ पर कहर ढ़ाना प्रारम्भ कर दिया। अचानक पूलिस का छापा घर पर पड़ा और मैं गमन के जुर्म में जेल के सिकंजों तक पहुंच गया। मेरी नौकरी छीन गयी। सुधा के अरमानों कि मैं बली चढ़ गया। जब तक जेल में रहा मेरा मित्र राकेश मेरी पूरी आर्थिक स्थिति से मदद करता रहा। मैं कुछ वर्षो बाद वाहर निकला वहीं घर जहां खुशियां, हरियाली की तरह खिली रहती थी। आज पतझड़ सा बन गया था। फिर भी मैं सुधा के दामन में सुख भरना चाहता था। उस सुख को मैं लतर नहीं बनाना चाह रहा था। पर एक दिन मुझे काम से लौटने पर एक पत्र मिला जिसमें लिखा था दीपक तुम मुझे वो खुशी नहीं दे पा रहे हो जो एक स्त्री को चाहिए, ना चैन की रोटी; ना शहर की रोशनी; ना महफिल का रंग; न

होटलों की शान। मेरा यहाँ दम घूट रहा है। मैंने राकेश से विवाह कर लिया है। मुझे भूल जाना तुम्हारे लिए यही बेहतर हैं। मेरा पत्र पढ़ कर सर फटा जा रहा था। यह पढ़कर मैं सोच रहा था क्या यही मेरे त्याग का फल है। वह सुधा जिसे मैंने मासूम लता समझकर बढ़ने दिया वह बबूल का पेड़ निकली मैंने खूद भूख सही पर उसे भूखा नहीं रहने दिया था। ईश्वर ने लड़कियों को सुख और अरमानों से ही सजाया है। वह ही उसका श्रृंगार है। जब तक मैंने खुशी दी वह मेरी थी जिसके कारण आज यह हाल हुआ। जिसकी खुशी के लिए यह घर उजड़ा। आज वह ही मेरी चिता जलाकर चली गयी। वह धीरे–धीरे परेशाना और नशे में रहने लगता है। किसी तरह पुनः मेहनत करके अच्छी सर्विस पा लेता है। दिन सामान्य से होने लगते है। पर क्या फायदा ऐसे जीवन से अतः उसका सारा खर्च नशे में जाता था, तनहाइयां और गम भूलाने के लिए वह कोठे पर वेश्याओं के पास जाने लगता है। एक सुमन नाम कि वेश्या से उसका बराबर मिलना होता है। उसके स्वभाव से उसे ऐसा महसुस हुआ कि एक वेश्या में भी स्त्री होती है। वह स्त्रीयों से अब नफरत करने लगा था और वेश्याओं के पास इसलिए जाता था क्योंकि वह दूसरों के आरंमा सुख के लिए जिन्दा रहती है। उनमें स्त्री नहीं होती है। वह महज वेश्या होती है। परन्तु उसका भ्रम उस समय टूट गया जब सुमन के मधुर बोल उसकी आंखें एक मजबूरी और लाचारी की दास्तान कहने लगी। उसने बहुत सी वेश्याओं के साथ दिन गुजारे थे। अपनी तन्हाइयों को बांटा था परन्तु किसी ने ठीक से बात भी नहीं कि थी। उनके हर लब्जों में एक जाहिल और फुहड़पन झलकता था जो कदापि एक स्त्री को परिभाषित नहीं करता था। परन्तु सुमन के व्यवहारों से उसे एक वेश्या में स्त्री नजर आयीं उसका मन एक बार पुनः स्त्री प्रेम में सिमटने लगा।

एक दिन सुमन से उसके कोठे पर आने का कारण जानना चाहा तो उसकी आंखों में तैरते आंसू ने अपनी पूरी दास्तान सुना दी। वह बचपन से ही सपना देखा करती थी कि किसी अच्छे घर में उसका विवाह होगा। खूब घूमेंगे, खूब अच्छा पहनेंगे। एक लड़के को अपना दिल दे दिया और उससे अपने अरमानों की पूर्ति का वादा करके उसके साथ घर से भाग गयी थी, परन्तु कुछ दिन उसने खुश रक्खा फिर धोखें से किसी दलाल के हाथों मुझे बेचकर मेरे अरमानों की बलि चढ़ा दी। तब से आज तक मैं यहा हूं। मन आज भी अपने मां–बाप को पाना चाहता है। आंखे तरसती है। पर यहां से निकल नहीं सकती। कौन स्वीकार करेगा मुझे। उसकी कहानी सुनकर मैं सुधा के द्वारा मिली स्त्री नफरत ने करवट बदल दी। आज एक वेश्या की दास्तान सुनकर मेरा दिल पिघल गया। मैं रोज उसी के पास आने लगा उसकी मदद पैसों और साधनों से किया करता था। वह मेरी तन्हाइयों का सहारा बन चूकी थी। मन ही मन उसे अपना बनाने की सोचने लगा। मैंने सोचा एक स्त्री को स्वं में वेश्या (सुधा) को पूजा था। अब एक वेश्या के अन्दर की स्त्री को पूजता हू जो कि एक लाचार जिन्दगी जी रही है। यह सोच एक दिन मैंने मन कि बात सुमन से कह दी। पर मेरा दिल उस समय पुनः टुटकर बिखर गया जब सुमन ने मुझसे कहा कि मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकती। मेरे पास सुरेश नामक लड़का आता है। जिसे मैं अपना पति समझती हूँ। उसने मुझसे वादा किया है कि वह मुझे यहां से बम्बई ले जाएगा। और सारे सुख देगा। मैंने उसे बहुत समझाया कि तुमने एक बार अपने अरमानों को सजा कर ही आज कोठे पर आयी हो। फिर ऐसे आरमानों का श्रृंगार कर किसी के साथ जा रही हो। वहां भी वही मिलेगा जो यहा मिला। पर उसके मन में तो बम्बई का ख्वाब बसा था। वह पुनः वहां से टुटकर चलने लगा। तभी अचानक सामने के कोठे पर एक बोझिल सी आंखों से देखती हुयी एक वेश्या दिखती है। जिसे देखकर दो पल मैं ठहर सा गया। उसके लव कुछ बोलने को होते है। वह दीपक–दीपक आवाज देती है। मैं मुड़कर चल देता हूँ। वह आवाज देती रही। मैं पग पर पग बढ़ाता रहा। वह कोई और नहीं उसके अतीत की सुधा थी।

उसके मित्र ने उसे कोठे पर बेच दिया था। आज सुधा के अरमानों ने उसका श्रृंगार कर दिया। वह दीपक–दीपक चिल्लाती रही पर दीपक अब यह बड़बड़ाता हुआ चलता रहा कि सभी स्त्री एक आरमानों की दुल्हन होती है। बाकी कुछ नही।

# जो मेरे राह के बीच आएगा

✍संगीता बलवन्त, एडवोकेट

उस कॉटो को, पैरो से कुचल डालूंगा
जो मेरे राह के बीच आएगा
उस विलासिता को यू मसल डालूंगा
जो मेरे चाह के बीच आएगा
उस सपने को नींद से भगा डालंगा
जो मेरे पथ के बीच आएगा
उस भावना को जला डालूंगा
जो इस देशभक्त के बीच आएगा।

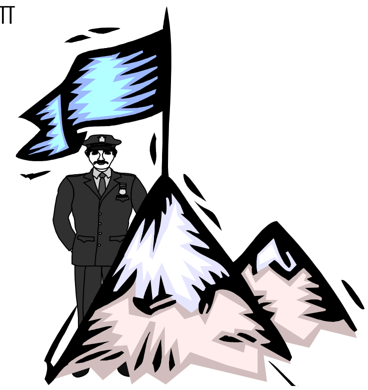

# माह सितम्बर के व्रत, त्योहार एवं साईत

पं0 शम्भू नाथ मिश्रा

### भाद्र शुक्ल पक्ष

1.09 सोमवार : पंचमी, ऋषि पंचमी व्रत। बिनाा जोते हुए खेत का शाक खाना चाहिए। ऋषि पूजन।

2.09 **मंगलवार** : पूर्व दिशा में गुरू का उदय। लोलार्क षष्ठी व्रत। आज पुत्रार्थियों को काशी में भदैनी स्थित लोलार्क कुण्ड में स्नान करना चाहिए। देव षष्ठी। स्वामी कार्तिकेय दर्शन। रवि योग रात्रि 10.28 तक।

3.09 **बुद्धवारः** सप्तमी। महालक्ष्मी व्रतारम्भ 16 दिनों तक। लक्ष्मी कुण्ड में स्नान प्रारम्भ। सभी कार्यो के लिए सिद्धयोग 8.49 तक।

**6.09 एकादशी शनिवारः** पद्मा 11दशी व्रत। सबका।

7.09, **द्वादसी, रविवारः** महारविवार व्रत। नमकरहित भोजन करना चाहिए। वामन द्वादसी व्रत।

8.09 **त्रायोदशी,सोमवारः** सोम प्रदोष व्रत। पंचक आरम्भ रात्रि 3.22।

9.09, चर्तुदशी, मंगलवारः अनन्त चतुर्दशी व्रत।

10.09, बुद्धवार, पुर्णिमाः स्नानदान व्रत की पूर्णिमा। पूर्णिमा श्राद्ध।

### आश्विन कृष्ण पक्ष

**11.09 गुरूवार, एकमः** चातुर्मास्य व्रती को आश्विन मास में दूध पीना वर्जित है। प्रतिपद श्राद्ध। नाव निर्माण धान्यारोपण, शिल्प विद्या वस्तु क्रय–विक्रय का मुहूर्त। दिन 4.48 के बाद मे गर्भाधान, नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग नाव निर्माण सूती स्नान वाटिका रोपण और फसल काटने का मुहुर्त है।

**12.09 शुक्रवार, द्वितीयाः** द्वितीया श्रज्ञद्ध। चन्द्रदोदय रात्रि 7.18। लक्ष्मी सहित श्री विष्णु जी का पलंग पर रखकर पूजन करने से अक्षम धठ, दाम्पत्य सुख की प्राप्ति। सर्वार्थ सिद्धयोग सायं 4.96 से अमृत सिद्धयोग सायं 6.17 से। सीमान्त जातकर्म, नामकरण, शिशु ताम्बूल भक्षण, अन्नप्रासन, नवीन खाटिया–चौकी आदि का उपभोग का मुहुर्त है।

**13.09 शनिवार, तृतीयाः** भद्रा दिन 11. 33 से रात्रि 12.14तक। पंचक समाप्ति रात्रि 8.11। तृतीला श्राद्ध। भद्रा से पूर्व पूर्व दिशा को छोड़कर अन्य दिशाओं में यात्राा का मुहुर्त है।

**14.09,रविवार, चतुर्थीः** शुक्रोदय पश्चिम रात्रि 8.57। उत्तरा फाल्गुनी का सूर्य दिन में 2.336। संकष्ठी श्री गणेश चतुर्थी व्रत। चन्द्रोदय रात्रि 8.19। चतुर्थी श्राद्ध। रोग विमुक्त स्नान मुहुर्त।

**15.09 सोमवार, पंचमीः** भरणी श्राद्ध। पंचमी श्राध। फसल काटने, नवीन चौकी, खटिया का उपभोग वस्तु क्रय, विक्रय का मुहुर्त है।

**16.09मंगलवार, षष्ठीः** षष्ठी श्राद्ध। सभी कार्यो के लिए शुभ रात्रि 3.37 तक। कृतिका नक्षत्रा रात्रि 3.37 तक।

**17.09बुद्धवार,षष्ठीः** रोहिणी नक्षत्रा। भद्रा प्रातः 6.05 से 7.05 तक। कन्या राशि का सूर्य रात्रि 12.43। गृह वस्त्रा दान, गोदावारी स्नान। विश्वकर्मा जयन्ती। सप्तमी श्राद्ध।

**18.09 सप्तमी, गुरूवारः** रोहिणी नक्षत्र, प्रातः 6.10। जीवित पुत्रि का व्रत। महालक्ष्मी व्रत चन्द्रोदय रात्रि 10.52। अष्टमी श्राध ा–अष्टका श्राद्ध। रात्रि 12.14 से पहले पुसंवन, सीमंत जातकर्म, नामकर्ण शिशु ताम्बुल भक्षण, अन्नप्राशन, सूती स्नान, नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग, नाव निर्माण, व्यापार वाहन खरीद विक्री, वाटिका रोपड़, पश्चिम उत्तर दिशा की यात्राा, शिल्प विद्या, औषधि सेवन, आपरेशन का मुहुर्त है।

**19.09 शुक्रवार, अष्टमीः** मातृ नवमी श्राद्ध। सौभाग्यवती स्त्रियों का भी श्राध।

**20.09 शनिवार, नवमीः** भद्रा रात्रि 11. 36 से। दसमी श्राद्ध। दिन 10.26 के बाद रात्रि 11.36 से पहले पश्चिम–उत्तर दिशा की यात्राा का मुहुर्त है।

**21.09, रविवार,दसमी** : भद्रा दिन 12. 04 तक। एकादशी श्राद्ध। दिन में 11.57 से सभी कार्यो के लिए शुभ।

22.09 **सोमवार, एकादशीः** 12.14 के बाद पुसवन सीमान्त, नवीन खटिया–चौकी आदि का उपभोग, नव निर्माण, वाटिका रोपण, पशुओं की खरीद विक्री, पश्चिम को छोड़कर अन्य दिशा की यात्राा का मुहुर्त है।

**23.09 मंगलवार, द्वादसीः** त्रायोदशी श्राध ा, मौन प्रदोष व्रत। सवार्थ सिद्धयोग वस्तु क्रय–विक्रय शस्त्रा निर्माण मुहुर्त है।

**24.09 बुद्धवार, त्रायोदशीः** दिन में 11. 46 से रात्रि 11.13 तक भद्रा। मास शिवरात्रि व्रत। मृत व्यक्तियों का श्राध।

**25.09 गुरूवार, चतुर्दशीः** श्राध की अमावस्या। अज्ञाततिथि वालों का श्राध, पितृ विर्सजन।

**26.09 शुक्रवार, अमावस्याः** स्नानदान की अमावस्या।

### आश्विन शुक्ल पक्ष

**27.09 शनिवार** : प्रतिपदा प्रातः7.26, चन्द्र दर्शन। शारद नवरात्रा प्रारम्भ। कलश स्थापन, ध्वजारोपण, अभिजित मुहुर्त दिन 11.37 से दिन 12.24 तक।

**29.09 सोमवार, चतुर्थीः** वैनायिकी श्री गणेश चतुर्थी व्रत।

# जरा हंस दो मेरे भाय

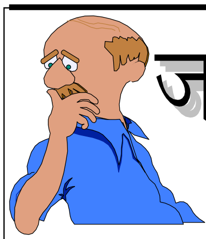

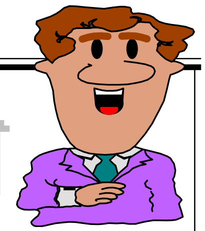

☠एक चीटी खूब तेजी से दौड़ी जा रही थी। रास्ते में उसकी सहेली ने पूछा कि इतनी तेजी से कहाॅ दौड़ी जा रही हो, तो चीटीं ने उत्तर दिया मेरे दोस्त हाथी का एक्सीडेंट हो गया है। मैं उसे खून देने जा रही हूॅ।

☠पत्नी (पति से) मैं तुमसे जो कुछ भी कहता हुॅ उसे तुम एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हो।

पतिः लेकिन मैं जो कहता हुॅ तुम उसे दोनों कान से सुनकर मुॅह से निकालने लगती हो।

☠रामू (अपने दोस्त श्याम से) अब तुम्हारे दाॅत का दर्द कैसा है?

श्याम पता नहीं दर्द वाला दाॅत तो उखड़वाने के बाद मैंने डाक्टर के क्लीनिक पर ही छोड़ दिया था।

☠मनोज (पड़ोसी के घर जाकर) मैं आपसे एक बात करने आया हूॅ, आपका कुत्ता मेरी सांस को दो बार काट चुका है।

पड़ोसीः मुझे बहुत अफसोस है आगे से मैं इस बात का ध्यान रखूंगा।

☠प्रेमिका (प्रेमी द्वारा शादी का प्रस्ताव करने पर) पहले अपने हालात बदलों, फिर कोई कदम उठाना।

प्रेमीः डार्लिग तुम चिंता क्यों करती हो। शादी से हमारे हालात पर कोई फर्क नहीं पड़ेगा, तुम अपनी नौकरी पर जाते रहना और मैं नौकरी की तलाश जारी रखॅूगा।

☠ सोहन (अपनी पत्नी से) लगता है ज्यों–ज्यों मेरी उम्र बढ़ती जा रही है मुझमें ताकत भी बढ़ रही है।

पत्नीः तुम यह कैसे कह सकते हो सोहन। आज से बीस साल पहले मैं बीस रूपये की चीनी बड़ी मुश्किल से उठा कर ला पाता था, लेकिन अब मैं बीस रूपये की चीनी बड़ी आसानी से उठा कर घर ले आता हुॅ।


**चौक का दाम अब सिविल लाईन्स में**

**खुल गया कपड़े का भव्य शो**

स्टूडेन्ट्स टेलर्स, शकुन चौक की नई भेंट

**कलेक्शन**

**THE REVISIT SHOP**

**Raymond**

मीना बाजार के सामने, सेल्स टेक्स आफिस के नीचे सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

फोन : 2608082


**अफशाॅ परवीन,** कक्षा : 9

☠ दो सहेलिया आपस में बातें कर रही थी। सीमा–मेरे पति शेर की तरह बहादुर, चीते की तरह फुर्तीले और हाथी की तरह मस्त चलने वाले है।

रीता–अच्छा उन्हें देखने के लिए कितने का टिकट लेना होता होगा?

☠गाइड–बच्चों को चिड़ियाघर दिखा रहा था। एक छोअी बच्ची ने गाइड से पूछा–क्या आपका कभी भालू से सामना हुआ है?

गाइड–हां। एक बार भालू मेरे काफी करीब आ गया था। पहले तो मैं उसकी तरफ घूरता रहा, फिर वह मेरी तरफ बढ़ता रहा।

बच्चे उत्साहित होकर–उसके बाद क्या हुआ?

गाइड– मैं डर कर उसके बगल वाले पिंजरे में घुस गया।

☠ दो दोस्त आपस में लेन–देन की बात कर रहे थे।

श्याम–यार, मुझे याद नहीं आ रहा है कि मैंने तुमसे 100 रूपये कब लिए थे?

हरीश–जब तुम नशे में थे।

श्याम–अच्छा–अच्छा, मगर वह तो मैंने वापस कर दिए थे।

हरीश–कब?

श्याम– जब तुम नशे में थे।

☠शराब के नशें में धुत पति से पत्नी ने कहा,' क्या नशें में आपको मेरा नाम भी याद नहीं रहता।'

'शराब पीने के बाद मैं हर गम भूल जाता हूं। पति बोला।

☠ विशाल को एक दिन रास्ते में जिन्न मिला। उसने विशाल को एक वरदान मांगने को कहा।

विशाल–दिल्ली से आगरा तक का एक फ्लाईओवर बन जाए।

जिन्न–ऐसा नहीं, कोई तर्कसंगत इच्छा जाहिर करो, जिसे पूरा किया जा सके।

विशाल– मुझे महिलाओं के बारे में पूरी समझ हो जाए। आखिर वो किन बातों से खुश होती है और किन बातों से नाराज।

जिन्न कुछ देर चुप रहा फिर बोला–फ्लाई ओवर कितने लेन का होना चाहिए।

डॉ.विष्णु सक्सेना

# क्यों रोते हैं बच्चे

जहां बच्चे का खिलखिलाना और अठखेलियां करना माता–पिता को सुख पहुंचाता है, वहीं बच्चे का रोना उन्हें परेशानी में डाल देता है। अधिकांश माता–पिता जान ही नहीं पाते कि उनका बच्चा क्यों रो रहा है। अक्सर होता यह है कि वे उसे भूखा मानकर दूध पिलाना शुरू कर देंगे या अफीम से बना हुआ कोई योग देकर उसे सुलाने का प्रयास करेंगे। ये दोनों ही तरीके उस नौनिहाल के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने के समान हैं। बच्चे का रोना–बिलखनाउसकी संवेदना को प्रदर्शित करता है।

**कभी–कभी बच्चा अकेलापन महसूस करने के कारण, मां के न होने पर और उसकी इच्छा के विरूद्ध कुछ किए जाने पर भी खूब रोता है। इन कारणों से रो रहे बच्चे की आंखों से आंसू नहीं निकलते।**
**बच्चा जब भी रोए तो यही समझना चाहिए कि बच्चे को किसी चीज की जरूरत है, या फिर वह किसी बीमारी से ग्रस्त है। आप बच्चे के रोने की आवाज सुनकर समझ सकती हैं कि उसे क्या तकलीफ हैं**

जन्म लेते समय बच्चे का रोना उसके जीवन की शुरूआत का प्रथम लक्षण होता है। उसके बाद बच्चा जब भी रोता है तो यही समझना चाहिए कि बच्चे कोकिसी चीज की जरूरत है, या फिर वह किसी बीमारी से ग्रस्त है। जानकार माताएं और दादियां तो बच्चे के रोने की आवाज सुनकर सकझ लेती हैं कि बच्चा क्या चाहता है या किस तकलीफ में है। विदेशों में भी बच्चों की रोने की आवाजों को रिकॉर्ड कर यह विश्लेषण किया गया है कि किस बीमारी में बच्चे के रोने की आवाज कैसी होती है।

बच्चों के रोने के कुछ कारण तो सामान्य से होते हैं। जैसे भूख लगी हो तो बच्चा रोता है। भूखे बच्चे के मुंह में चुसनी, निपल या अंगुलि डालने पर वह चुप हो जाता है। भूखा बच्चा थोड़े गुस्से में भी होता है, इसलिए कभी–कभी वह दूध पिलाने के बाद भी थोड़ा–बहुत रोता रहता है। कभी–कभी बच्चा अकेलापन महसूस करने के कारण, मां के न होने पर, मानसिक अशांति रहने पर और उसकी इच्छा के विरूद्ध कुछ किए जाने पर भी खूब रोता है। इन कारणों से रो रहे बच्चे की आंखों से आंसू नहीं निकलते और जैसे ही स्थिति उसके मन के अनुकूल हो जाती है, वह अपने–आप चुप हो जाता है।

जब बच्चे की नैपकिन गीली हो या उसने कच्छी के अंदर पेशाब या टट्टी कर ली हो, तब भी वह रोता है। हो सकता है कि उसे पहनाई गई गले की चेन, कमर की करघनी या किसी कपड़े में लगी पिन चुभ रही हो या कोई कीड़ा काट रहा हो, मक्खी लग रही हो, सिर में जूंएं हो गई हों, आदि। इन सब सामान्य कारणें से भी बच्चा स्वाभाविक रूप से रोने

लगता है।

लेकिल कई बार ऐसा लगता है कि बात कुछ असामान्य है। अगर तेज आवाज में रोते–रोते बच्चे की मुटिठयां भिंच रही हों, बाहें मुड़ जाएं, आंखें चढ़ जाएं, मुंह फट जाए और चेहरे पर पीड़ा के भाव स्पष्ट हों तो किस माता–पिता की चैन नहीं छिन जाएगी? बच्चा इस तरह तभी रोता है, जब वह किसी बीमारी के कारण तकलीफ में हो। कुछ खास बातों को याद रखकर यह अंदाज लगाया जा सकता है कि बच्चा किस तकलीफ में है–

अगर बच्चा कमजोर और सूखा हुआ हो, तेज आवाज में रोए और देर तक रोता ही रहे तो उसे मिरासमस बीमारी हो सकती है। ऐसे बच्चे मुंह में चुसनी या दूध की खाली बोतल मुंह से हटती है, वे फिर रोना शुरू कर देते हैं।

बच्चा अगर धीमे–धीमे लगातार पिन्न–पिन्न एक स्वर में रोता रहता है, तो शायद उसे क्वाशिओरकर बीमारी हुई है। बच्चा अगर नाक के स्वर में रो रहा है तो इसका मतलब हे कि उसे नाक मैं तकलीफ हो रही है। नाक बंद होने, नाक के अंदर की श्लेष्म कला में सूजन होने, हड्डी बढ़ जाने, नाक के अंदर कुछ फंस जाने, तालू की फालिज होने या नाक में डिप्थीरिया झिल्ली होने की दशाओं में बच्चे इस तरह रोते हैं। गले में डिप्थीरिया {रोहिणी} होने और गले व छाती की मांसपेशियों में पोलियो होने पर बच्चे की आवाज बड़ी मुश्किल से निकलती है, निकलती भी है तो बहुत कम, धीरे–धीरे और कर्कश स्वर में। गले की नसों में बीमारी होने से भी यही हालत होती है और बच्चा बिना आवाज के रोता है।

बच्चे के रोते समय अगर सीटी जैसी आवाज आए, तो इसका मतलब है कि सांस की नली में कोई चीज फंस गई है। यह कोई बाहरी वस्तु भी हो सकती है और टीबी की गांठ भी। सर्दियों में बच्चे निमोनिया, छाती में पानी या पस भरने या ब्रोंकियोलाइटिस होने की वजह से भी रोते हैं।

कान मैं फुंसी हो जाने, मैल फूलने, पस आने,कान की झिल्ली में सर्दी के कारण सूजन आने जैसी तकलीफों में बच्चा रोते समय बार–बार कान पर हाथ रखता है या कान को स्वयं ही पकड़कर खींचता है। यदि उसके कान के नीचे के हिस्से को थोड़ा–सा दबाव देकर छुआ जाए तो वह दर्द से बिलबिला जाता है। ऐसे बच्चे को जुकाम भी हो जाता है और दो–तीन बुखार भी रहता है।

अगर बच्चा पेट फूलने के कारण बेचैन होकर रो रहा है तो हो सकता है कि ज्यादा या बेवक्त दूध पीने से उसके पेट में गैस बन गई हो। टट्टी की गांठे बन जाती हैं और पेट दर्द होता है। एनीमा या ग्लिसरीन की बत्ती लगाने से गैंस निकल जाती है, शौच होकर पेट खाली हो जाता है। एक वर्ष से कम आयु का बच्चा अगर अक्सर शाम को दो–तीन घंटे रोता रहता है तो यह पेट में गैस बनने का लक्षण हो सकता है। ऐसे बच्चे को यदि पेट के बल लिटा दिया जाए तो गैस निकल जाती है और उन्हें आराम मिलता है।

आंतों में आंतें फंस जाने पर बच्चे को इतनी जोर पीड़ा होती है कि रोते–रोते उसका बुरा हाल हो जाता है। कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि बच्चे को रोने का दौरा पड़ गया हो। उसका शरीर पीला–सा और कभी सफेद–सा पड़ने लगता है। वह पैरों को कसकर पेट से चिपका लेता है और पूरी ताकत से चिल्लाता है, फिर शांत हो जाता है।

अगर बच्चा पेशाब करते समय रोए और पेशाब कर लेने के बाद चुप हो जाए तो इसका मतलब यह है कि उसकी पेशाब की नली में संक्रमण हो गया है या पेशाब करने के स्थान पर छिल गया है।

मेनिंजाइटिस या दिमागी बुखार का शुरूआती लक्षण है तेज बुखार, बेचैनी और रोना। इसमें धीरे–धीरे गर्दन का मुड़ना बंद हो जाता है, उल्टियां आने लगती हैं और बेहोशी बढ़ने लगती है।

खुजली, एग्जीमा, स्केबीज आदि त्वचा रोगों और दवाओं के रिएक्शन में भी बच्चा लगातार रोता रहता है। यदि हाथ–पैर हिलाते समय भी बच्चा रोए तो स्कर्वी, हड्डी में मवाद पड़ने या हड्डी टूटने की जांच करानी चाहिए।

रात के समय बच्चा यदि लगातार रोने लगे, तो पैरों में दर्द, डरावना स्वप्न, कूल्हे की टीबी आदि कारण हो सकते हैं। दिमागी तौर पर कमजोर बच्चे कुछ ज्यादा ही रोते हैं।

डी.पी.टी. का इंजेक्शन लगने के बाद बच्चे 2–3 दिन तक रोते ही रहते हैं। जहां इंजेक्शन लगा हो, उस जगह वे छूने भी नहीं देते। ऐसे में बर्फ से सिंकाई करना और डॉक्टर की सलाह पर दर्दनिवारक दवाएं देना उचित है।

बच्चे के रोने को हल्के ढंग से नहीं लेना चाहिए। बच्चा बोलकर अपनी परेशानी नहीं बता सकता, इसलिए उसकी तकलीफ को समझकर कुशल बालरोग विशेषज्ञ को दिखाना चाहिए। ❍

**आवश्यक सूचना :** पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायलीय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

# एक साथ गूंजी पांच किलकारियां

नाइजीरियाई एक महिला ने किंग काउंटी हॉस्पिटल में पांच बच्चों को जन्म दिया। 28 वर्षीय ओमोलोला ओसोसाम के घर चार बेटिया और एक बेटा आया है। जच्चा व बच्चा की हालत स्थिर बताई गई है। सर्जरी से हुए बच्चों में हरेक का वजन तकरीबन 900 ग्राम है।

पेशे से बागवानी विशेषज्ञ आमोलोला जब दो महीने की गर्भवती थी, तभी डॉक्टरों ने बता दिया था कि उसके गर्भ में एक साथ पांच बच्चे पल रहे है। आमोलोला का कहना है कि यह सुनकर वह अक्सर डरती रहती है। डर वश ही वह अक्सर डॉक्टरों से पूछती रहती थी।

# कुत्ते न कटाई राज परिवार की नाक़

लंदन। ब्रिटेन के राजघराने में पिछले 350 वर्षो के इतिहास मे किसी को अपराध के लिए सजा नहीं भुगतनी पड़ी। पहली बार महारानी एलिजाबेथ की इकलौती बेटी राजकुमारी एन्नी को अपने कुत्ते की खता पर गुनहगार बनते हुए सजा के रूप में 500 पौंड का जुर्माना भरना पड़ा।

एन्नी के कुत्ते ने शाही खानदान की शोहरत को नजरअंदाज करते हुए दो बच्चों को काट खा लिया। अगर उसे मालुम होता कि उसके इस कृत्य से राजघराने की मर्यादा पर आंच आएगी तो शायद ऐसा करने से बाज आता। एन्नी को सिर्फ जुर्माना भरकर मुक्ति मिल गई वरना डेंजरस् डॉग एक्ट के उल्लघंन के जुर्म में 6 महीने के लिए जेल की हवा भी खानी पड़ सकती थी। 1649 में चार्ल्स प्रथम को अपराधी करार दिए जाने के बाद की ऐसी किसी

घटना की जानकारी नहीं है जब राज परिवार के सदस्य को सजा हुई है।

# इज्जतदार लूटेरे

सिंगापुर। 'हमलोगा को इस बात का बेहद अफसोस है कि हम आपके पैसे ले रहेहै। अभी हमारा समय खराब चल रहा है, इसलिए लूट के सिवाय कोई अन्य चारा नही है।' सिंगापुर के दो लुटेरों ने ये बातें एक बुजुर्ग से कही। दोनों लुटेरों ने 73 वर्षीय ला सिई हांग से मोटी रकम, मोबाइल फोन, पेजर और घड़ी लूट लिए। उस दिन हांग अपने घर लौट रहे थे। तभी लिफ्ट में लुटेरों ने माफी मांगते हुए उनसे उनका सामान ले लिया। हांग का कहना है कि दोनों युवक तकरीबन बीस बाइस साल के रहे होंगे और उनके पास कोई हथियार नहीं था। हांग ने भी कोई जोर जबरदस्ती नही की और अपना सामान लुटेरों को सौंप दिया। फिलहाल पुलिस दोनें लुटेरों की तलाश कर रही है।

# हर मर्ज की दवा है सोयाबिन

नई दिल्ली। भोजन में सोया प्रोटिन लेने से खून में कोलेस्ट्राल की मात्रा कम होने के साथ दिल की बीमारी, कैंसर और डायबिटीज से पीड़ित होने की आशंका कम हो जाती है। यह हड्डियों को मजबूत बनाता है और महिलाओं में रजोनिवृत्ति के बाद होने वाली समस्याओं को भी कम करने में सहायक है। हाल ही में भारत और विदेशों में हुए कई शोधों के बाद इसका खुलासा किया गया है। नेशनल कैंसर इंस्टीट्यूट भी हर रोज 25 से 30 ग्राम सोया प्रोटीन लेने की सलाह देता है। सोयाबिन दवा नहीं बल्कि अजूबा और चमत्कारिक खाद्य पदार्थ हे। नई दिल्ली स्थित ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस में हुए ताजा अध्ययन के नतीजों में पता लगा है कि लगातार सोया प्रोटीन लेने वाले लोगों में कोलेस्ट्राल की मात्रा में 20 फीसदी तक कम हो जाती है।

अमेरिकन कैंसर सोसायटी के अध्ययन के अनुसार अमेरिकी और पश्चिमी भोजन के मुकाबले सोयाबिन खाने से एशियाई लोगों में हारमोनल कैंसर होने की आशंका कम रहती है। भारत में सोयाबिन की बड़ी तो लोकप्रिय है, लेकिन सोया दूध और सोया पनीर लोकप्रिय नहीं हो पाया है। सोया प्रोटीन से बच्चों की बौद्धिक क्षमता का तेजी से विकास होता है।

## इधर–उधर की

आप भी इस स्तम्भ के लिए कुछ खास खबरें जोआपके संज्ञान मेंहो या कोई नया आविष्कार हुआ हो तो हमें भेज सकते हैं। अच्छी खबर को हम अवश्य ही प्रकाशित करेंगे। अच्छी खबरें के छपने पर हम आपको हजारों रुपये के ईनामी कूपन भी भेजेंगें तो देर किस बात की। कलम उठाइए और लिख भेजिए हमारे पते पत्र–व्यवाहार के पते पर।

## बदलाव

✍आशीष दलाल

किसी बात को लेकर वह अपने मंदबुद्धि भाई पर बरस पड़ा। मां से जब यह सहा न गया तो वह बोल उठी——मेरे जीते जी तू उसे इस तरह सताता है तो मेरे बाद उसका क्या भविष्य?

मां, जब मैं उसके लिए इतना कुछ करता हूं तो उसे भी तो मुझे सहकार देना चाहिए।

अरे! इस काबिल होता तो यूं तेरे हाथ की मार थोड़े ही खाता। इससे अच्छा हो कि भगवान उसे उठा ले। कम से कम छूटे तो सही।

मां! पीड़ादायी शब्द उसके मुंह से निकलकर रह गए।

गलत थोड़े ही कह रही हूं। जब से वकालत करने लगा है, तब से रिश्तों को भी नापतौल कर लिभाने लगा है। मां बोलती रही और वह सुनता रहा। फिर बिना खाये ही निकल गया।

आज एक अजीब–सा केस उसके पास आया। बूढ़ी और लाचार मां अपने बेटे पर भरण–पोषण संबंधी दावा कर रही थी। 'क्या करूं बेटा? रात दिन एक कर उसे पढ़ा–लिखा कर इस काबिल बनाया था। आज जब अच्छी नौकरी पर है तो मेरा भरण–पोषण करना तो दूर, मुझे पूछता तक नहीं। जब तक हाथ–पैर चलते रहे कमाकर खाती रही। अब तो हाथ पैर भी जवाब देने लगे है, इसी से अपना हक पाने के लिए लड़ना पड़ रहा है।'उस बूढ़ी मां सें लिपटकर रो पड़ा। मां उसके सिर पर हाथ रखकर उसे सहलाने लगी।

## जमाना

✍अंजना त्रिपाठी

वे नियत समय पर ही अपनी बेटी के साथ बस से आते जाते थे। शायद दोनों ही एक कार्यालय में कार्य करते थे या आसपास ही। इसीलिए एक साथ ही आना–जाना होता था। पर विशेष बात तो यह थी कि वे बेटी को खिड़की की ओर बिठाकर खुद किनारे बैठते। उनका हाथ सीट के डण्डे पर पीछे ही बना रहता। यह ही नहीं इतना बचाकर बेटी को चढ़ाते–उतारते कि गलती से भी कोई उसे छू न सके।

कोई यात्री गिरने से बचने के लिए सीट पर हाथ टिका लेता तो सीधे या टेढ़े तरीके से हाथ हटवाकर ही मानते। यह देख कुछ अजीब लगता। एक बार बस से उतरते समय किसी ने टोक दिया,"क्यों भाई, इतना परेशान क्यों करते हैं?"

"अब आप ही बताइये, सयानी बेटी साथ में है। इतना ध्यान न रखूं तो क्या करूं? कुछ लोग तो बस बहाना ही ढूंढा करते हैं....... ।"वे आगे ब्रढ़कर चले गए। बात ठीक भी लगी। आ,खिर पिता हैं, उन्हें चिन्तन

एक दिन वे अकेले ही बस में चढ़े। वे सीट न पाकर बीच में ही खड़े हो गयी। भीड़ थी इसलिए धक्के भी लगते जा रहे थे।

अचानक उन सज्जन के आगे खड़ी लड़की चिल्लाई, बतमीजी है ये? इतनी देर से चुप हूं उसका मतलब ये नहीं कि आप आगे ही बढ़ते जायं....। अरे, अपनी उम्र का तो लिहाज करो, मेरी जैसी तो बेटी होगी तुम्हारी. ....।" वह लड़की बड़बड़ा रही थी और वे सज्जन सिर झुकाये खड़े थे।

उस बात से सभी चौंके थे। नियमित यात्रियों को उनका सफेद पड़ा चेहरा साफ नजर आ रहा था। वे किसी से नजरें नहीं मिला पा रहे थे।अगले ही स्टाप पर वे उतर गए। अब समझ में आया कि बेटी की सुरक्षा के लिए वे इतने परेशान क्यों रहते थे। सचमुच जमाना बहुत खराब है।

## मैली बनियान

✍ डा0 सुरेन्द्र मंथन

उसने आईने में नजर फैंकी और बड़बड़ाया——चलेगा, रंगदार टी–शर्ट के नीचे मैली बनियान। सब चलता है।

गली पार करते ही नजर दमयंत पर पड़ी——आलू बुखारे जैसे सुर्ख, उभरे गाल, बोलती आंखें, गजब की चाल। हाय रब्बा! एक बार देख भर ले।

नजदीक पहुंचते ही उसकी नजर झुक गयी, कदम डगमगाए, सिर झुकाए वह शरीफ बच्चे की मानिंद गुजर गया। कहां दमयंती, कहां वह। लेकिन सोच भर लेने से क्या होता है? किसी का कुछ छीन तो नहीं लियाफ मुफ़्त की दिल्लगी।

मुख्य सड़क पर कोहली मिल गया। आदतन मुस्कराया। "क्यों क्या बात है?" उसकी मुस्कराती आंखों से वह कट–सा गया।

कोहली की उंगलियां उसकी टी–शर्ट से खेल रही थी। "मार्बलैस।"

"क्यों मक्खन लगा रहा है यार?" उसका गला सूख गया। कोहली के होंठ और भी फैल गये।

उसके चेहरे का रंग फीका पड़ गया। इसे कैसे पता चल गया? उसने देख तो नहीं लिया? लेकिन मैंने किया ही क्या है? देख या सोच भर लेने से क्या होता है?

बनियान का एक कोना टी–शर्ट की बांह से बाहर झांक रहा था। वह हड़बड़ा गया, "पसंद है तो तू ही रख लेना।" कहकर वह तेजी से आगे बढ़ गया।

### पाठकों से अनुरोध

सभी पाठकों से विनम्र अनुरोध है कि उनको पत्रिका कैसी लगी। पत्रिका में क्या कमियॉ है, क्या और डाला जाए क्या हटाया जाए आदि के बारें अपने विचार हमें निरन्तर भेजते रहें। आपके विचार ही हमारी सर्वोत्तम पूजीं है। **संपादक**

# हिरासत में हो रही मौतों के अनेक कारण

मनीष द्विवेदी

हिरासत में मौतों के मामले में मानवाधिकार आयोग और गिरफतारी पर अदालती दिशा–निर्देशों के बावजूद अप्रैल 2002 से मार्च 2003 के बीच राज्यों तथा केन्द्रशासित प्रदेशों में हिरासत में 1340 मौतें होना, निश्चित रूप से चिंता का विषय हैं। इनमें से 1157 मौतें न्यायिक हिरासत में तथा 183 मौतें पुलिस हिरासत में हुई है। खास बात यह है कि हिरासत में सबसे अधिक 161 मौतें उत्तर प्रदेश में हुई हैं। उसके बाद बिहार (153 मौतें) तथा महाराष्ट्र (117मौतें) का नंबर आता है। एक यह बात देखी गई है कि पिछले तीन सालों के दौरान प्रगतिवर्ष होने वाली हिरासत में मैतों का अंकड़ा कमोवेश जहां का तहां बना हुआ है। इसे इस बात का प्रमाण मानें की हिरासत में मौत की घटनाओं पर सख्त रवैया अपनाए जाने के बाद भी कोई उत्साहजनक परिणाम सामने नहीं आए हैं। वैसे, यह भी कहा जा सकता है कि सख्त रूख अख्तियार करने के कारण हिरासत मकें मौतों की संख्या मेकं भले ही कमी नहीं आई हो, लेकिन इनमें विशेष वृद्धि भी हुई अतः इस तयि पर संतोष किया जा समता हे। हिरासत में मौतों की बढ़ती संख्यया को देखते हुए राष्ट्रीय मनवाधिकार आयोग ने स्थायी निर्देश दे रखे हैं। हिरासत में मौत की होने के 24 घंटो के अन्दर ही आयोग को सूचित किया जाना अनिवार्य हैं इसके आलावा पोस्टमार्टम, वीडियोग्राफी और न्यायिक जांच कराने के भी निर्देश हैं। इस आशंका को निराधार नहीं बताया जा सकता कि हिरासत में मौतों के पूरे आंकड़े मानवाधिकार तक नहीं पहुच पाते होंगे। अभी कुछ वर्ष पूर्ण ही सुप्रीम कोर्ट ने किसी व्यक्ति को गिरफतारी अथवा उसे हिरासत में लिये जाने के संबंधा मे व्यापक दिशा–निर्देश जारी किये थे। ये दिशा–निर्देश इतने सुस्पष्ट और सुरागों से मुक्त थे, कि इन पर यदि पूरी ईमानदारी से पालन किया जाता तो एक ओर जहां देश में मानवाधिकार संरक्षण की स्थिति में संतोषजनक सुधार दिखाई देता वहीं हिरासत में इतनी बड़ी संख्या में मोतें होने के बात भी नहीं उठ पाती है। बहरहाल, हिरासत में मौतों के आंकड़े साबित करते हैं कि हमारे यहां कानून एवं वयवस्था के लिये जिम्मेदार और (कथित रूप से) अनुशासित बल पुलिस की मनोवृत्ति वहीं पुरानी है। आजादी मिले आधी शताब्दी से अधिकसमय गुजर चुका है, लेकिन भारतीय पुलिस के मन–मस्तिष्क पर अंग्रेजों के जमाने वाली छवि छाई हुई है। वह आज भी आम आदमी को गुलाम और दमन को अपना अधिकीर मानती हें एक खास बात यह भी महसूस की जा रही है कि भारतीय पुलिस पेशेवर दक्षता में मामूली से ही वृद्धि देखी गई। पाया यह जा रहा है। कि अधिकांश राज्यों की पुलिस में अब पहले जैसा अनुशासन भी दिखाई नहीं देता हैं उसका मुखबिर तन्त्र अस्तव्यस्त होचुका हें भ्रष्टाचार में भारतीय पुलिस आकण्ठ डूबी हुइ है, अधिकांश पुलिसकर्मियों और अधिकारियों को स्तर के अनुसार राजनीतिक आकाओं की ड्योढ़ी पर सलाम बजाते देखा जाने लगा है। फिर एक तथ्य यह भी है कि समय के अनुसारपुलिस प्रशिक्षण में सुधार नहीं करने के कारण पुलिस कर्मियों की अन्वेषण क्षमता में गिरावट दिखाई देने लगी है। सबूतों, सुरागों के सहारे अपराध की तह तक पहुचंने वाले पुलिस अधिकारी अब पुराने पुलिसिया किस्सों के पात्र मात्र रह गये है। अधिकांश राज्यों में पुलिस पर वी.आई.पी सुरक्षा की जिम्मेदारी ने पुलिस कर्मियों के काम का बोंझ इस कदर बढ़ा दिया है कि किसी मामले की वे पूरी ईमानदारी से जांच–पड़ताल तक नहीं कर पाते। इसी का नतीजा है कि आज अधिकांशअपराधों का ओर–छोरपुलिस को नहीं मिल पाता। कहीं कुछ हाथ लगा तो कमजोर मामला इतना कमजोर हो जाता है कि आरोपी सजा से साफ बचनिकलते हैं। हिरासत में मौत के 80 प्रतिशत मामलों का कारण बीमारी और बुढ़ापा बताया जाता है। इस पर विश्वास कर लें, तब भी जो शेष 20 प्रतिशत मौतें होती हैं, उनके लिये किसे जिम्मेदार मानें। कह सकते हैं कि कभी किसी दबाव और कभी अक्षमता की खीज के चलते पुलिस वालों का क्रोध हिरासत में लिये गये व्यक्ति पर फूट पड़ता है।

पत्रिका के लिए
सम्पर्क करें:
पापुलर बुक डिपों,
इलाहाबाद गर्ल्स डिग्री कॉलेज, कैम्पस,
जीरो रोड बस अड्डा के पास, इलाहाबाद
लक्ष्मी बुक हाउस
सिविल लाईन्स, इलाहाबाद

# आपकी जुबान

## मुझे पत्रिका में सहयोग करने पर बहुत खुशी होगी

महोदय,

मुझे आपकी पत्रिका पढ़ कर अत्यन्त खुशी हुई और यह मन में आया कि मैं आपकी पत्रिका से जुड़कर आपका कुछ सहयोग कर सकूँ, तो मुझे बड़ी खुशी होगी। अगर आप मुझे किसी पद पर नियुक्त करते हैं तो मैं पूरे लगन और निष्ठा से कार्य करूंगा और पत्रिका को कौशाम्बी जनपद में जन–जन तक पहुँचाने में आपका सहयोग करूंगा।

विनय कुमार त्रिपाठी
पत्रकार

ग्राम व पो0– रामपुर धमाबो, जिला कौशाम्बी

## बहुत कठिन डगर रेल यात्रा की।

सेवा में,

सम्पादिका जी, नमस्ते

मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' कभी–कभी मुझे पढ़ने को एक सहेली के यहाँ मिल जाती है। उसमें काफी अच्छी सामग्री पढ़ने को मिलती है। अगस्त के अंक में छपा लेख बहुत कठिन है डगर रेल यात्रा की। वास्तव में दिन प्रतिदिन बढ़ रही है रेल दुर्घटनाओं को देखते हुए ऐसा ही आभास होता है कि अब रेल से सफर करना खतरे से खाली नहीं है। रेल यात्रा में कब हादसा हो जाए इसका कोई भरोसा नहीं है। रेल यात्रा यानी हादसों की यात्रा। इस पर कमी आने के बजाय दिन प्रतिदिन इसमें बढ़ोतरी ही हो रही है। लेखक विचार कि नीतिश कुमार हादसों का मंत्री कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी वाकई सही हैं। एक समय ऐसा था जब बड़ी दुर्घनाए होने पर मंत्री अपनी नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए स्थिपा दे दिया करते थे। मगर अब तो हमारे माननीय

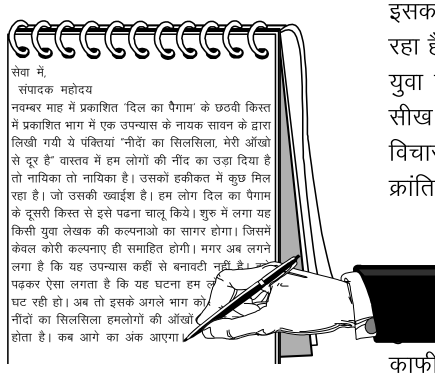

सेवा में,
संपादक महोदय
नवम्बर माह में प्रकाशित 'दिल का पैगाम' के छठवी किस्त में प्रकाशित भाग में एक उपन्यास के नायक सावन के द्वारा लिखी गयी ये पंक्तियां "नीदें का सिलसिला, मेरी ऑखो से दूर है" वास्तव में हम लोगों की नींद का उड़ा दिया है तो नायिका तो नायिका है। उसकों हकीकत में कुछ मिल रहा है। जो उसकी ख्वाईश है। हम लोग दिल का पैगाम के दूसरी किस्त से इसे पढना चालू किये। शुरु में लगा यह किसी युवा लेखक की कल्पनाओ का सागर होगा। जिसमें केवल कोरी कल्पनाए ही समाहित होगी। मगर अब लगने लगा है कि यह उपन्यास कहीं से बनावटी नहीं है। ... पढ़कर ऐसा लगता है कि यह घटना हम ... घट रही हो। अब तो इसके अगले भाग को ... नीदों का सिलसिला हमलोगों की ऑखों ... होता है। कब आगे का अंक आएगा।

रेल मंत्री कुर्सी को फेबीकोल से चिपका कर बैठ गए। चाहे हादसे हो या हादसों के बाप उनकी सेहत पर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला। बस वहीं घिसी पीटी प्रतिक्रिया हादसों की जॉच कराई जाएगी, हादसे के शिकार लोगों को सहायता राशि दी जाएगी आदि आदि। रेल सुरक्षा पर लिया गया पैसा रेल हादसो के जॉच में ही खर्च हो जाता होगा। अगर जॉच करनी बंद कर दी जाए तो शायद हादसे कम हो।

सत्यानन्द तिवारी
नया चौक, कुसीनगर, उ0प्र0

## दिल का पैगाम अब एक नए मोड़ पर

सेवा में,

सम्पादक महोदय

स्नेह पत्रिका की मैं नियमित पाठिका हुँ। मैंने पहली बार अपने एक रिश्तेदार के वहाँ इलाहाबाद में पढ़ी थी। उसमें दिल का पैगाम का पहला भाग छपा था। मुझे यह उपन्यास काफी अच्छा लगा साथ ही यह पत्रिका भी। मैंने अपने रिश्तेदार को प्रत्येक माह खरीद कर भेजने को कहा। तबसे लगातार मैं इस पत्रिका और उपन्यास दिल के पैगाम को पढ़ रही हुं। पहले लगा कि यह उपन्यास मात्र हम युवाओं व युवतियों के लायक है लेकिन जैसे–जैसे इसका आगे का भाग आता जा रहा है लग रहा है यह तो सभी वर्गो के लिए है। इसे युवा से लेकर बुर्जुग तक पढ़ कर कुछ सीख ले सकते है। लेखक महोदय के विचार बड़े क्रांतिकारी है। आज ऐसे क्रांतिकारी लेखको की हमारे समाज को जरूरत है। अगर इस उपन्यास से कुछ लोग भी सीख ...ो यह उपन्यास सफल साबित होगा। ...उम्मीद है कि लेखक के विचार से काफी लोग प्रभावित होगें। हमारे मुहल्ले में ही मेरे एक से लेखक महोदय के 15 समर्थक मिल गये है। सब उपन्यास को पूरा होने पर लेखक महोदय को उपहार देने की योजना बना चुके हैं। वे लोग लेखक की बातों पर अमल करना भी प्रारम्भ कर दिये है। अपने कुछ सहेलियों और लेखक के विचारों के प्रशसकों की सूची नीचे दे भी रही हुँ। रूचि शर्मा, नीतू वदैही, राजू वैदेही, संगीता श्रीवास्तव, अमिता गोस्वामी, नेहा नुपूर, विनय कुमार, राकेश सिंह व मेरे मम्मी पापा। जिनका नाम उन लोगों के मना करने पर नहीं दे रही हुँ। कृपया आपसे नम्र निवेदन है कि हमारे शहर में भी पत्रिका को लगवाने का कष्ट करें।

अलका कनौजिया
एफ 18, साबूलाल मार्केट, सागर, म0प्र0

# पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक

## विशेषांक की अतिथि संपादक : योगमाया रीता मिश्र

☞ तीर्थराज प्रयाग भारत की संस्कृति राजधानी रहा है ☞ तीर्थराज प्रयाग भारत की राजनीतिक राजधानी रहा है
☞ तीर्थराज प्रयाग भारत की साहित्यिक राजधानी रहा है
☞ साहित्य और पत्रकारिता का दूध जल–सा सम्बंध है, दोनों एक दूसरे पर आश्रित है। अपने स्वरूप के लिए, अपने विकास के लिए, हम पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक के माध्यम से
☞ तीर्थराज प्रयाग की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ☞ तीर्थराज प्रयाग की राजनीतिक पृष्ठभूमि
☞ तीर्थराज प्रयाग की साहित्यिक पृष्ठभूमि के साथ

प्रयाग की पत्रकारिता का संक्षिप्त इतिहास और प्रयाग के इतिहास प्रसिद्ध शीर्षस्थ पत्रकारों सहित वर्तमान अधुनातन पीढ़ी के कर्मठ युवा पत्रकारों की प्रामाणिक जानकारी तथा प्रयाग के जनसंचार माध्यमों का प्रामाणिक विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

**इस आशा और विश्वास के साथ–**

कि ☞ आप तन–मन–धन से ☞ विचारों और विज्ञापनों से ☞ अपने अमूल्य सुझावों से
हमें अविलम्ब अवगत कराने की कृपा करेंगे। तथा

तीर्थराज प्रयाग के पत्रकारों और प्रयाग की ऐतिहासिक पत्रकारिता के प्रति अपनी दृढ़ आस्था का परिचय प्रकट करके तीर्थराज प्रयाग की संस्कृति/राजनीति/पत्रकारिता एवं साहित्यकता को सादर अपना प्रणाम निवेदन करेंगे।


## सम्पर्क सूत्र :

**गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी** – प्रधान संपादक
**डॉ0 कुसुमलता मिश्रा** – कार्यकारी संपादक
**रजनीश तिवारी** – सहायक संपादक
**मधुकर मिश्र** – संयुक्त संपादक

**मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज',**

एल.आई.जी–93, नीम सराय, कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद, उ0प्र0,

एम.टेक. कम्प्यूटर एजुकेशन सेन्टर, धुस्सा पावर हाउस के पास, पीपलगांव, इलाहबाद, उ0प्र0 भारत


## विशेषांक विज्ञापन दरें निम्न है–

### रंगीन कवर पृष्ठ

| | | |
|---|---|---|
| 1. | अंतिम पृष्ठ (फुल पेज) | 7000/– |
| 2. | मुख्य पृष्ठ अन्दर की तरफ (फुल पेज) | 6000/– |
| 3. | अंतिम पृष्ठ अन्दर की तरफ (फुल पेज) | 5000/– |
| 4. | सेन्ट्रल स्प्रेड (स्वेत/श्याम) | 4000/– |
| 5. | सामान्य फुल पेज | 2000/– |
| 6. | आधा पृष्ठ | 1000/– |
| 7. | शुभकामना संदेश | 500/– |